प्रकरण - २
संबंधित साहित्य की समीक्षा

(Review of Related Literature)

२.९ संबंधित साहित्य की समीक्षा (Review of Related Literature)

“साहित्य की समीक्षा” पद, में दो शब्द समीक्षा और साहित्य शामिल है। उक्त शब्द "साहित्य" अपने परम्परागत अर्थ से भिन्न अर्थ प्रकट / सुचित करता है। यह हिंदी शास्त्रिक, अंग्रेजी साहित्य ऐसी जैसी भाषाओं के संदर्भ में प्रयुक्त किया जाता है। इसमें एक विषय वस्तु (सूची) गद्यपद आदि का समावेश है। यहां अनुसंधान पद्धति में शब्द साहित्य किसी विद्या .. के विशेष क्षेत्र के ज्ञान का निर्देश करता है जिस में इसके सैद्धांतिक, प्रायोगिक और अनुसंधान अध्ययन शामिल है।

शब्द ‘समीक्षा’ का अर्थ है ज्ञान .. को विकसित करने के लिए अनुसंधान के विशिष्ट क्षेत्रों में ज्ञान को व्यवस्थित करना यह प्रदर्शित करने के लिए कि यह अध्ययन इस क्षेत्र में एक परिवर्तन / संयोजन होगा। साहित्य की समीक्षा का कार्य अप्राधिक रचनात्मक देने वाला है क्योंकि अनुसंधानकार्य को अपने अध्ययन के लिए युक्तिपूर्ण विवरण / आधार प्रदान करने के लिए उक्त क्षेत्र में उपलब्ध ज्ञान को अनुपम ढंग में संशोधित करना होता है।

यही शब्द ‘समीक्षा’ और ‘साहित्य’ ऐतिहासिक अभिगम में विश्लेषित अर्थ रखते है। उक्त अनुसंधानकार्य, अपने ऐतिहासिक अनुसंधान में, फलस्वरूप ही प्रकाशित सामग्री की समीक्षा की अपेक्षा विशेष अधिक कार्य किया है। वह नई सूचना के खोजने और अन्वेषण
करने का प्रयत्न करती है, जो पहले कभी रिपोर्ट नहीं किया गया और ""साहित्य की समीक्षा पद में अर्थात् धारणा और प्रक्रिया पर कभी नहीं विचार किया गया, संवेंधण और प्रायोगिक अनुसंधान की तुलना में ऐतिहासिक में एसा विभिन्न अर्थ रखता है""।

"साहित्य किसी भी क्षेत्र में आधार का निर्माण करता है, जिस पर भविष्य के सभी कार्यों का निर्माण किया जाएगा। यदि हम साहित्य की समीक्षा के द्वारा प्रदान किए गए क्षेत्र का आधार निर्माण करने में असफल होते हैं तो हमारा कार्य नगण्य और सरल होने की संभावना है और प्रायः दोहरा कार्य होगा जो किसी अन्य व्यक्ति द्वारा बेहतर रूप में पहले ही किया जा चूका है।"

2.2 संबंधित साहित्य की समीक्षा का महत्त्व

(Importance of Review of Related Literature)

अनुसंधान एक सर्वविशेषता गतिविधि है जो ज्ञान के एक संक्षिप्त नियत की खोज और विकास की ओर प्रेरित करती है। अन्यथा जिस जाना की समस्या पर अनुसंधान पत्रिकाओं (पत्रिका, पुस्तकें, विवेचनों, सिद्धांतों और सूचना के अन्य स्रोतों की सारांशीपूर्ण समीक्षा किसी अनुसंधान की योजना बनाने में महत्वपूर्ण चरणों में से एक चरण है।

समीक्षा का उद्देश्य अनुसंधान अथवा समरूप अथवा संबंधित विषयों की तुलना करना है। अनुसंधानकर्ता ग्राह: अनुसंधान रिपोर्ट की प्रस्तावना में संगत साहित्य की सारांश दे देते हैं। साहित्य समीक्षा किसी विषय के वर्तमान ज्ञान को समझने के लिए पृष्ठभूमि प्रदान करती है और नये अध्ययन के लिए महत्व प्रकाश डालती है। "साहित्य समीक्षा रिपोर्ट करना अनुसंधान अध्ययन को अधिक वैज्ञानिक और अद्यतन बनाती है।"
अतः संबंधित अध्ययनों की समीक्षा अनुसंधान की सम्पूर्ण प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण चरण है।

“संबंधित साहित्य की समीक्षा अनुसंधानकर्ता को उक्त क्षेत्र में बर्तमान जान से परिचित होने के लिए अनुमति देता है, जिस में वह अनुसंधान को संचालित करने जा रहा है।”

साहित्य समीक्षा उक्त क्षेत्र में रुपरेखा अथवा पूर्वनामिक स्थापित करती है और अतः समायोजन प्रदान करती है जिस में अनुसंधानकर्ता अध्ययन रिपोर्ट करता है। पाठक के लिए अध्ययन को समझने के लिए यह परिचित / अध्ययन उसके लिए आवश्यक विचारण और अनुसंधान के लिए सारांश प्रदान करता है। इसके अलावा, यह अनुसंधानकर्ता को विकल्पनात्मक निर्धारण करती है। पुराने अनुसंधानकर्ता को अनुसंधान के सिद्धांत के लिए मार्गदर्शन करते है और अनुसंधानकर्ता को एक भीतर ढंग में सोचने के लिए सहायता करता है। संबंधित साहित्य का महत्व नीचे दिए अनुसार है:

- यह अनुसंधान के सिद्धांतों के लिए आधार स्थापित करता है।
- यह अनुसंधानकर्ता को दिशा देता है।
- यह सूचित करता है कि समस्या से संबंधित क्षेत्र में कितना कार्य किया जा चूका है।
- यह समस्या से संबंधित विचारों और धारणाओं को प्रतिपादित करता है।
- यह डाटा / आकड़ा संकलन के लिए उचित पद्धति और औजार / साधन चुनने में सहायता करता है।
- यह अनुसंधान के संबंध में जान के क्षेत्र को बढ़ाता है।
- यह साहित्य की पद्धति को उचित चुनाव के संबंध में मार्गदर्शन करता है।
- सर्वेक्षण और प्रायोगिक अनुसंधान में, साहित्य की समीक्षा आंकड़ा के वास्तविक संकलन में सहायता करते हैं।

- उन अनुसंधानों में भी पिछले अध्ययनों से नवीन अध्ययन के लिए प्रसंग रचना के लिए समीक्षा को जाती है।

- ऐतिहासिक अभिगम में, साहित्य की समीक्षा अनुसंधान आंकड़ा प्रदान करते हैं।

इस प्रकार संरचित साहित्य की समीक्षा अनुसंधान प्रक्रिया का प्रमुख पहलू है, जो विचार प्रदान करता है और इस ओर मार्गदर्शन करता है कि अनुसंधान का कार्य किस प्रकार शुरु किया जाय और इसे कैसे प्रगाढ़ और परिणाम अभिमुखी किया जाय। और इसके अलावा, पूर्ववर्ती अनुसंधानों में जो कुछ हानि पाई गई है, उसकी क्षतिपूर्ति भी की जा सकती है और अनुसंधान का पुनरार्थन रोका जा सके।

इसके अलावा, आगे के अनुसंधान के लिए, पिछले अनुसंधान की सिफारिशें, जो उनके अध्ययनों में सूचीबद्ध, के संबंध में, यदि अनुसंधानकर्ता, संरचित साहित्य और पहले के अनुसंधानों को अध्ययन नहीं करता है तो अनुसंधानकर्ता कोई अनुसंधान ठीक शुरु से आरंभ करने को आकर्षित हो सकता है बजाय इस के सूत्र को वहां से उठाया जाय जहां पहले के अनुसंधान ने छोड़ा था। इसके परिणाम स्वरूप महत्त्वपूर्ण अनुसंधान निष्कर्ष अभ्यासकर्ताओं और नीति निर्माताओं के लिए कोई महत्त्वपूर्ण सामान्य धारणा बनाना कठिन है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि अधिक पूर्व से संरचित अनुसंधान बहुत महत्त्वपूर्ण है जिसके द्वारा अनुसंधानकर्ता अनुसंधान कार्य, इसे सफल बनाने के लिए शुरू करने के लिए समझ सके। संरचित साहित्य उक्त अध्ययन और पूर्व अध्ययन से संरचित धारणाओं के संबंध में जान के
संचय के साथ इस प्रकार व्यवहार करता है। उक्त अध्ययन के अंतगत पिछले अनुसंधानों की समीक्षा के बाद विचारों की इस शीर्षक के अंतगत चर्चा को जाती है।

2.3 समायोजन (Adjustment)

"समायोजन एक निरंतर प्रक्रिया है जिसमें एक व्यक्ति स्वयं और उसके/अपने पर्यावरण के बीच अधिक मैत्रीपूर्ण/मधुर संबंध पैदा करने के लिए अपना व्यवहार बदलता है।"

माननीय आत्मा अथवा मस्तिष्क में तीन परतें होती हैं, जागरूक, अर्धजागरूक और अजागरूक (चेतन, अर्धचेतन और अचेत)। अजागरूक हमारे व्यवहार को कुंजी रखती है। यह उसके सत्व और उसके पर्यावरण के साथ एक व्यक्ति के समायोजन और कुसमायोजन निष्ठुर करती है। यह सभी दबी हुई इच्छाएं, आकांक्षाएं, विचारों/अनुभूतियों, प्रेमाणों, आभावाणों निष्ठुर है, उनमें से काम (सेक्स) और आकांक्षा से निष्ठुर है। एक व्यक्ति अंश (डिजीटल), सीमा अथवा दंगों से समायोजित अथवा कुसमायोजित है जिनमें ये निष्ठुर अथवा निष्ठुरण के अर्धन रखे जाते हैं।

फ़ुसूड के अनुसार, प्रकृति के अनुसार मनुष्य एक सुख चाहनेवाला प्राणी/जानवर है। वह सुख पाना चाहता है और दर्द अथवा किसी चीज की पराहत करना चाहता है जो इसके सुख प्रेमी प्रकृति के अधिकार में न हो। समाज की रीतियों द्वारा आरोपित सामाजिक प्रतिबंधों और उसके अधिकार (संपर्क) द्वारा आदेशित उसके अपने नैतिक मामलों का उसकी सुख चाहनेवाली प्रकृति के अप्रतिबंधित और बेलगाम इच्छाओं में संपर्क होता है। ये सुख प्रकृति में अधिकांशतः कामुक (सेक्स्युअल) है। एक व्यक्ति उस सीमा तक समायोजित रहता है जहां तक ये संतुष्ट हैं। एक व्यक्ति व्यवहार के अपकार्य और कुसमायोजन को ओर बढ़ाता है यदि
ऐसे संतोष को खतरा होता है अथवा इनकार किया जाता है। फ्रूट्स ने विशेषण और बिना विशेषण व्यवहार नमूनों के लिए ‘अहम’ और ‘अधिअहम’ की काल्पनिक भाराओं को स्वीकृत तथ्य माना है।

एक व्यक्ति का व्यवहार उसके अहम और उसके पर्यावरण उस सीमा तक सामान्य और मैत्रीपूर्ण रहता है जहां तक उसका अहम उसकी अहित योजनाओं और उसके अधिअहम द्वारा आदेशित नैतिक नीतिसंबंधी मापदंडों के बीच संतुलन बनाये रखने में योग्य है। यदि अहम एक व्यक्ति और अधिअहम के उपर उचित निर्यात करने के लिए काफी मजबूत नहीं है तो उसका परिणाम व्यवहार का अपकार होगा। तब दो विभिन्न स्थितियां उत्पन्न होगी।

समायोजन अनुकूलन अथवा समझौता जैसा सरल शब्द नहीं है। वास्तव में यह मस्तिष्क और व्यवहार परिस्थिति अथवा स्थिति है जिसमें एक व्यक्ति यह अनुभव करता है कि उसकी आवश्यकताएं संतुष्ट हो चुकी हैं, अथवा हो जाएंगी। इस आवश्यकताओं की संतुष्टि के, तथापि, एक व्यक्ति की संस्कृति और समाज की रूपरेखा और अपेक्षाओं के अन्दर अवश्य होना चाहिए। जब तक यह होता है, व्यक्ति समायोजन रहता है: ऐसा न होने पर, वह अभिशाप मानी बदरुआ और मानसिक बीमारी की ओर बढ़ जाता है।

सांस्कृतिक नमूने समायोजन को एक व्यक्ति की संस्कृति और समाज के व्यवहार के मान से एक कार्य बनाता है। दूसरी तरफ, सामाजिक-मानववैज्ञानिक अथवा व्यवहारकीय रीति समायोजन को एक व्यक्ति के अहम और पर्यावरण के बीच अन्तर्वांती को एक कार्य बनाती है। तदनुसार व्यवहार चाहे अनुकूलनशील अथवा अपनानुकूलनशील इक्से परिणाम पक्षातः प्रभाव के रूप में सामान्यतया जाना जाता है।
एक व्यक्ति और उसके पर्यावरण के बीच समन्वय रखने और पुनर्निर्माण के लिए प्रयोग किए गए हंगो को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष के रूप में वर्णित किया जा सकता है। प्रत्यक्ष हंगो को पूर्ण तकसंगत और जागरूक स्तर पर वैश्विक इरादा पूर्वक प्रयोग किए जाते हैं। इनमें परीक्षाओं को संख्या बढ़ाने, प्रयासों में सुधार करने अथवा आंकांकों के लक्ष्य अथवा स्तर के दुबारा बेहतर द्वारा सम्मिलन प्राप्त करना आदि शामिल है। समायोजन प्राप्त करने के अप्रत्यक्ष पद्धतियों अथवा स्तर पर प्रयोग किए जाते हैं। उनका उद्देश्य व्यक्ति को मनोवैज्ञानिक खतरों से बचाने के लिए उसे (व्यक्ति को) अस्थायी समायोजन प्रदान करना है। विभिन्न प्रकार के मानसिक अथवा अनुशासन यंत्रावधान जैसे संवेदना, आधुनिकीकरण, प्रक्षेपण आदि अप्रत्यक्ष पद्धति है, जो मनोवैज्ञानिक, तनाव, संघर्ष और द्वारा अस्थायी राहत पहुँचाते हैं और एक व्यक्ति को कुछ समय के लिए समायोजन को चाहने के लिए योग्य बनाते हैं।

2.4 लिंग (Gender)

"पति के लिए काम (सेक्स) और मुक्त काम में बड़ा अंतर हैं कि पति के लिए काम को लागत प्राप्त करना कम होता है।"

"में नहीं कहूँगा अप्सर से पैदा नहीं था, काम वह है, क्योंकि यदि वह मामला होता तो में उसे वह नहीं कहते नहीं देता।"

पुरुष और महिला का वर्गीकरण का अर्थ है सेक्स (काम)। पुरुष शारीरिक तौर पर अधिक मजबूत और भारी और कठिन कार्य करने योग्य हैं। महिला मधुरभाषी, कोमल और परवाह स्वभावी हैं।


2.5 वर्ग (Grade)

वर्ग का अर्थ है कक्षा या श्रेणी जिस में माध्यमिक विद्यार्थी अध्ययन करता है जैसे कि नवम वर्ग और दसम वर्ग प्रस्तुत अध्ययन में वर्ग नवम और दसम वर्ग में विभाजित है।

2.6 क्षेत्र (Area)

क्षेत्र को आकार या विस्तार के शब्दों में परिभाषित करना कठिन है। साधारणतः यह भौगोलिक स्थिति निर्धारित करता है। प्रस्तुत अध्ययन में क्षेत्र अहमदाबाद शहर तक सीमित है। यहाँ क्षेत्र अहमदाबाद शहर का अर्थ है अहमदाबाद का क्षेत्र जो दक्षिण में बिन्दुआल, उत्तर में नरोढ़ा, पश्चिम में सरक्षेज और पूर्व में मणिनगर से आबृत है। इस क्षेत्र को दो संकेतक जैसे शहरी क्षेत्र और ग्रामीण क्षेत्र है।
शहरी क्षेत्र (Urban Area)

एक क्षेत्र अधिकतम जनसंख्या घनत्व, उपलब्ध अधिकतम सुविधाएं, इसके परिवेश (चारों ओर का क्षेत्र) को तुलना में अभिव्यक्त के द्वारा वर्णित किया जाता है। शहर और कस्बे शहरी क्षेत्र हो सकते हैं। शहरी क्षेत्र शहरीकरण की प्रक्रिया द्वारा बनते और आगे विकसित होते हैं। प्रस्तुत अध्ययन में आहमदाबाद शहर का अर्थ है मणिनगर, नवरंगपुरा, नारणपुरा, लाल दरवाजा, कालुपुर, शाहीबाग।

ग्रामीण क्षेत्र (Rural Area)

यह वह क्षेत्र है जो शहरों और कस्बों के बाहर है। यह कम जनसंख्या घनत्व के साथ गाँव का बढ़ा और पूर्थक (अलग) क्षेत्र है। प्रस्तुत अध्ययन में आहमदाबाद शहर के ग्रामीण क्षेत्र का तात्पर्य है कटवा, इसनपुर, विजाल, थलतेज, वासना, बोपल, सेटेलाइट, सरखेज, जोधपुर।

2.7 स्कूल के प्रकार (Category of School)

स्कूल के लड़कों का स्कूल, लड़कियों (कन्या) स्कूल अध्यवं सहस्त्रशा स्कूल में विभाजित किया जा सकता है। इसे अनुदान लेनेवाला स्कूल अथवा चलावर चलनिर्भर स्कूल/अनुदानप्राप्त स्कूल बेस्कूल हैं। जो सरकार के लिए लोगों द्वारा चलाए जाते हैं और सरकार अध्यापकों के चेतन को संभाल करती है। गैर-अनुदानप्राप्त स्कूल बेस्कूल हैं। जहाँ अध्यापकों को स्कूल प्रबंधन द्वारा भुगतान किया जाता है। प्रस्तुत अनुदानप्राप्त और गैर-अनुदानप्राप्त स्कूल।
2.8 फिर्ताले अनुसंधानों का अध्ययन

(Study of Past Researches)

पिछले अनुसंधानों का अध्ययन में राष्ट्रीय के साथ अन्तर्राष्ट्रीय अभ्ययन शामिल है।

हार्ट जे. हार्टबेल, जान एस. ए. एडवर्ड्स और लोरेन ब्राउन (२०११),
(आकल्परेशन) और भोजन की आदत, सीखने के लिए पाठ, बोर्नमाउथ युनिवर्सिटी पूले,
यु.के.ि।

उद्देश्य

(Objective)

1. अन्तर्राष्ट्रीय (युरोपीय और एशियन) स्टुडेंट्स फूड आकल्परेशन इन दि सुनामेड
किंगडम में विस्तार का मूल्यांकन।

2. इंग्लैंड के दक्षिण में एक युनिवर्सिटी के खातकोटर अन्तर्राष्ट्रीय विद्यार्थियों के एक
समूह के समायोजन अनुभवों का गुणात्मक अध्ययन से निष्कर्षों को रिपोर्ट करना।

अनुसंधान डिजाइन

साउथ इंग्लैंड की युनिवर्सिटी में खातकोटर अन्तर्राष्ट्रीय विद्यार्थियों के एक समूह से
अर्थव्यक्त गहन साकारात्मक संचालित किए गए।

59
निष्कर्ष

भोजन पसंदगी के प्रति एक "धकेल-खूंच" (पुश पुल) नमूना प्रस्तावित है जहां समायोजन को प्रगतिशील और बहुमुखी प्रक्रिया के रूप में वर्णित किया गया है जिस में वैज्ञानिक सांस्कृतिक और बाह्य कारणों के परिणाम स्वरुप दोलाप्रमाण (उत्तर-बढ़ाव) होता है। घर के लिए लालसा स्थायी ही जिसे भोजन के पूर्वाभिमुखीकरण पर ज्यादा अधिक ध्यान देने के द्वारा शामन किया जा सकता है।

जान सेलमेर और एलेशिया ल्यूग (२००३), निर्देश में कार्य स्थापन पर महिलाओं के निर्भरता जीवनयात्रा संकल्प / इजादा और उनका समायोजन, प्रबंध विभाग व्यवसाय स्कूल, हांगकांग, बैंकिस्ट युवनविस्तार, काउलून और काउलून, हांगकांग।

अनुसंधान प्रश्न

अन्तर्राष्ट्रीय कार्यकर्ताओं को बहुत मांग के बावजूद के अप्राणिक संकल्पवाली महिलाओं विदेश में कार्यस्थापन प्राप्त कर सकती है। क्या विदेश में जीवनयात्रा के लिए यह निश्चय उनके विदेश कार्य स्थापन में उनके सफल होने में भी उन्हें सहायता करेगा?

अनुसंधान रिपोर्ट:

हांगकांग में पश्चिमी महिला व्यवसायिक प्रवासीयों ने उनके प्रवासी कैरियर संकल्प और उनके अन्तर्राष्ट्रीय समायोजन के बारे में एक मेल सेवा में अनुरोध उटर दिए।

निष्कर्ष:

समय के लिए, नियंत्रण करते हुए उन्हें हांगकांग में कार्य स्थापन किए गए, उसके परिणाम दर्शाता है कि अधिक संकल्पित महिलाएं प्रवासी कैरियर अनुसरण करेंगी, उनका
पारस्परिक की योजना बेहतर हैं। सामाजिक-सांस्कृतिक समायोजन, सामान्य समायोजन और कार्य समायोजन के दोनों अन्य आयाम अन्तर में वैयक्तिक पारस्परिक क्रिया पर आधारित है।

पेट्रिक मालपुंगा (२०१२), युनिवर्सिटी आफ मालावी लाइब्रेरियन में संरचनात्मक समायोजन नीतियों, चलन (मुद्रा) अवबूल्यन और पुस्तकालय (लाइब्रेरी) प्रारंभिक पर उदारीकृत विनिमय दर, चाँसियर कालेज, युनिवर्सिटी आफ मालावी, जेबा, जीविया।

उद्देश्य:

इस लेख का उद्देश्य युनिवर्सिटी आफ मालावी लाइब्रेरियन में संरचनात्मक समायोजन नीतियों का पुस्तकालय और सूचना सेवाओं पर संबंध का निर्धारण करता है।

अनुसंधान डिजाइन:

एक प्रकरण अभ्यर्थन पद्धति अपनायी गई थी, और अंकक्रूण बज़ाद नस्तावेज और विभिन्न रिपोर्टें और तकनीकी कागजात - संग्रह किए गए।

निष्कर्ष:

निष्कर्ष दिखाते हैं कि इस अभ्यर्थन में पुस्तकालय संरचनात्मक समायोजन से प्रभावित हुई थी। पुस्तकालयों के बज़ाद में वृद्धि हुई परंतु मुद्रा अवबूल्यन, अंशदान और पुस्तकों की खरीद के लिए पुनरुत्थान करने के लिए विदेशी विनिमय की अनुपस्थिति के कारण प्रभावित हुए। और इसने पुस्तकालय और सूचना सेवाओं पर नकारात्मक संबंध किया।

रामकृष्ण पी. (२००८), केरला में विचार शैलियों और माध्यमिक स्कूल शिष्यों (विद्यार्थियों) का स्कूल समायोजन, शिक्षा विभाग, युनिवर्सिटी आफ कार्यक्रम।
उद्देश्य:

1) स्कूल पर्यावरण के साथ शिष्यों का समायोजन और उनकी विचार शैलियों की विशेषताओं का अध्ययन करना।

2) शिष्यों के आपस में विचार शैलियों के सभी आयामों की विशेषताओं के स्तर का अध्ययन करना।

3) केरल में माध्यमिक स्कूल शिष्यों की विचार शैलियों और स्कूल समायोजन पर सेक्स (काम) के प्रभाव का अध्ययन करना।

4) केरल के माध्यमिक स्कूल शिष्यों का उनके लिए, स्कूल के प्रकार और क्षेत्र के संबंध में अध्ययन करना।

5) माध्यमिक स्कूल शिष्यों के स्कूल समायोजन के साथ पुराणपंथी, उच्च स्तरीय, वैदिक और नृत्यादि विचार शैलियों की विशेषताओं के संबंध का अध्ययन करना।

6) माध्यमिक स्कूल शिष्यों के स्कूल समायोजन के साथ अराजक, स्थानीय और उदार विचार शैलियों की विशेषताओं के साथ संबंध का अध्ययन करना।

निष्पर्श:

1) उक्त अध्ययन ने प्रकट किया के सम्पूर्ण नमूने में शिष्यों का बहुमत स्कूल पर्यावरण के साथ अत्यधिक समायोजन है और शिष्यों का बहुमत सभी विचार शैलियों की अधिक विशेषताओं को रखते हैं। यह परिणाम निकला था, कि सहमूनों में अधिकांश शिष्य पर्यावरण के साथ अत्यधिक समायोजित है और सभी विचार शैलियों की विशेषताओं को रखते हैं।
2) उक्त अभ्यास ने प्रकट किया कि शिष्य विचार शैलियों के सभी आयामों की विशेषताओं को वहीं स्तर रख सकते हैं। विचारशैली के एक आयाम का उच्च अथवा निम्न स्तर का धारण / अधिकार अन्य आयामों के उच्च अथवा निम्न स्तर का धारण को प्रभावित किया है प्रतीत नहीं हुआ।

3) केराला में माध्यमिक स्कूलों के शिष्य आपस में विचारशैलियों के उच्च और निम्न स्तर का धारण को सेक्स (काम) प्रभावित नहीं कर रहा है।

4) उक्त अभ्यास के निष्क्रिय से यह पाया गया कि लड़कियों की अपेक्षा लड़के अपने स्कूलों में बेहतर समायोजित हैं, अनुदानप्राप्त स्कूल शिश्य सरकार स्कूल शिश्यों की अपेक्षा स्कूल पर्यावरण के साथ बेहतर समायोजित हैं, और ग्रामीण स्कूल शिश्य शहरी स्कूल शिश्यों की अपेक्षा स्कूल परिस्थितियों के साथ बेहतर समायोजित हैं।

5) यह परिणाम निकाला गया कि केराला में माध्यमिक स्कूल शिश्यों का स्कूल समायोजन पुराणपंथी, उच्च कुलतंत्रीय, वैश्विक और राष्ट्रवादी विचार शैलियों की विशेषताओं के साथ सकारात्मक रूप से संबंधित है।

6) यह परिणाम निकाला गया कि राज्य में माध्यमिक स्कूल शिश्यों का स्कूल समायोजन आराजक, सामाजिक और उदार विचार शैलियों की विशेषताओं के साथ नकारात्मक रूप से संबंधित है।

7) उक्त अभ्यास से यह प्रकट हुआ कि समुह अथवा संयुक्त में विचारशैलियों के आयाम केराला में माध्यमिक स्कूल शिश्यों के स्कूल समायोजन की भविष्यवाणी करने के लिए पर्याप्त विश्वसनीय नहीं है।
के. रंगानाथच (2008), समायोजन समस्याओं और किशोरी लड़कियों के संबंधित विषयों पर मार्गदर्शन और परम्परा का आधार (पी.एच.डी.) परियोजनाओं युनिवर्सिटी से सीएम।

परिकल्पना:

1) माध्यमिक स्कूल किशोरी लड़कियों की समायोजन समस्याओं का अध्ययन करना।

2) माध्यमिक स्कूल किशोरी लड़कियों की तीन विषय गणित, वाणिज्य और व्यावसायिक में समायोजन समस्याओं का अध्ययन करना।

3) विभिन्न प्रकार की समस्याओं - आल्ट-प्रतिबिम्ब शारीरिक, भावनात्मक, पारिवारिक और सामाजिक का अध्ययन करना।

4) लड़कियों के वाणिज्य और व्यावसायिक समूहों में सम्मिलित होने में अन्तर का अध्ययन करना।

अनुसंधान डिजाइन:

निरंतर भाव से चयन किए गए नमूनों पर अध्ययन में प्रायोगिक पद्धति प्रयोग की गई थी।

निष्कर्ष:

1) माध्यमिक स्कूल किशोरी लड़कियों ने समायोजन समस्याओं में पूर्व-परीक्षा में की अपेक्षा पश्चात्-परीक्षा में कम अंक प्राप्त किए।

2) तीन विषय समूहों- गणित, वाणिज्य और व्यावसायिक में - व्यावसायिक समूह लड़कियों गणित समूह की अपेक्षा पूर्व-परीक्षा में अधिक समस्याएं रखती है।

3) विभिन्न प्रकार की समस्याओं - आल्ट-प्रतिबिम्ब शारीरिक, पारिवारिक और सामाजिक में तीन विषय समूह लड़कियों पूर्व-परीक्षा में शारीरिक समस्याओं में महत्त्वपूर्ण रूप से
भिन्न होती है और अन्य समस्याओं में वे महत्वपूर्ण रूप से भिन्न नहीं होती है।

व्यवसायिक समूह विद्यार्थी अन्य दो समूहों की अपेक्षा अधिक शारीरिक समस्याएं रखते हैं।

4) पूर्व परीक्षा में आलम-पारणा में तीन विषय समूह महत्वपूर्ण रूप से भिन्न नहीं है।

5) स्कूल के प्रति मनोवृत्ति में, वाणिज्य और व्यवसायिक समूहों ने गणित समूह को अपेक्षा पूर्व-परीक्षा में उच्चतर अंक प्राप्त किए।

5) वाणिज्य और व्यवसायिक समूहों में लड़कियों के सम्मिलित होने में महत्वपूर्ण अंतर विद्यमान है। पूर्व-परीक्षा में व्यवसायिक समूह विद्यार्थियों ने अन्य दो समूहों की अपेक्षा अधिक सम्मिलित होना दर्शाते हैं।

6) तीन विषय समूह पूर्व-परीक्षा में चिन्ता में महत्वपूर्ण अंतर नहीं दिखाते हैं।

7) पूर्व-परीक्षा में उपलब्धि में वाणिज्य समूह लड़कियों ने अन्य दो समूह को अपेक्षा उपलब्धि में अधिक अंक प्राप्त किए।

8) पदातिक परीक्षा में समायोजन समस्या प्रासंगिक में तीन विषय समूह महत्वपूर्ण रूप से भिन्न नहीं है।

रणजीतसिंह (2010), कार्य दबाव, कार्य संतोष और पंजाबी युनिवर्सिटी पटियलाके हरयाणा स्कूल के शारीरिक शिक्षण शिक्षकों के आपस में समायोजन, शारीरिक शिक्षण विभाग, पंजाबी युनिवर्सिटी पटियलाके
उद्देश्य:

कार्यदृष्टि, कार्य संतोष और समायोजन के स्तर का अध्ययन करना जिसके साथ हरियाणा राज्य में विभिन्न प्रकार के स्कूलों में शारीरिक शिक्षा शिक्षक काम कर रहे हैं।

निष्कर्ष:

उक्त अध्ययन पोषित करता है कि कार्यदृष्टि, कार्य संतोष और समायोजन का स्तर जिस के साथ हरियाणा राज्य के विभिन्न प्रकार के स्कूलों में कार्यस्थल शारीरिक शिक्षकों एक दूसरे के आपास में भिन्न है।

कैथ्रिन गेबर्ड (२००७), “वास्तविक पर्यावरण सीखना” : विकलांगता के साथ विद्यार्थियों के लिए सीखने का अनुभव बढ़ाना, कॉम्प्यूटर-बाइड सूचना प्रणाली, जिल्द-२४, अंक-२, पृष्ठ-१९९-२०६।

उद्देश्य:

वास्तविक पर्यावरण सीखने के साथ अन्वेषणों की विकलांग विद्यार्थियों के युग के स्तरों द्वारा आनलाइन पर्यावरण के अन्दर अभिगम्य सीखने के लिए आवश्यकता का प्रदर्शन करना (वी.एल.ई / VLE) और वह सीमा जिस तक व्याख्यानकर्ता उक्त वी.एल.ई. सीखने को अभिगम्य बना तय है।

अनुसंधान डिजाइन:

विभिन्न विकलांगताओं के साथ पूर्वाधिकार विद्यार्थियों के एक छोटे केन्द्र समूह को एक स्थिति अभिगम की रचना के लिए प्रयोग किया गया था।
निष्कर्ष:

1) विकलांग विद्यार्थियों के परिप्रेक्ष्य पर आधारित एक बी.एल.ई. के शिक्षा विषयक, प्रायोगिक और युद्ध कौशल प्रयोग से संबंधित विषयों/स्थितियों में महत्वपूर्ण अंतर है।

2) शिक्षण कर्मचारियों के लिए बहुत से विकलांग विषय हैं जो उनके प्रतिदिन के शिक्षण का आमने-सामने.. में एक बी.एल.ई. को लाने के विचार के साथ पकड़े में लेने हेतु पाने के लिए प्रयास कर रहे हैं।

जे. रोनाल्ड गिलबर्ट, मेरिडिथ एफ. बर्नजु, इयान फाउ, जेरी हार (2010), “क्या लिंग महत्व रखता है? लिंग जनसाधनण से संबंधित कार्य की समीक्षा”, प्रबंधन में लिंग: एक अत्याधुनिक जर्नल, जिल्ड-25 अंक-8, पृष्ठ-676-699।

उद्देश्य:

उन अंशों (डिग्रीयों) की परीक्षा करना जहां तक लिंग और पुरुष व्यवसाय पेशेवरों के बीच अंतर और समानताएं विद्यमान है।

अनुसंधान डिजाइन:

तीन अंग्रेजी भाषी देशों के कुल 1964 विद्यार्थियों ने एक 75-लयब्रांड बहु-आयामी और चूका किया गया जिस में मनोवैज्ञानिक ज्ञान शैलियां, कार्यरत, कार्य-हित और वैश्विक स्वभाव से संबंध १७ योजनाओं से स्वतंत्र कार्य अधिकार प्रमाण नामित हैं।
निष्कर्ष:

प्रत्येक देश में स्त्री और पुरुष व्यवसाय पेशेवरों के कार्य अधिमानों के बीच कुछ 'ध्यान देने योग्य और महत्वपूर्ण' अंतर है। स्त्री और पुरुष व्यवसाय पेशेवरों के कार्य-अधिमानों के बीच अंतर एक राष्ट्र से दूसरे राष्ट्र में समान / स्थायी नहीं है।

रोनाल्ड एच. हेक, रार्ट बी. बोलित (1988), "पाश-भूमि, मनोवैज्ञानिक-सामाजिक कारकों और विषय वस्तु प्रयोग: माध्यमिक स्कूल वरिष्ठों पर प्रत्यक्षक्षान पर उनकी शिक्षा का प्रभाव", अन्तरराष्ट्रीय जर्नल आफ शैक्षणिक प्रबंधन, जिल्ड-12, अंक-3, पृष्ठ-१२०-१३२।

उद्देश्य:

विषय वस्तु प्रयोग के संबंध में अन्तर-व्यक्तिगत विविधता का अध्ययन (अर्थात् स्कूल समायोजन, भूल, माता-पिता और समुदाय के साथ संबंध)।

अनुसंधान डिजाइन:

यूएसएए संरचनात्मक नमूना माध्यमिक विद्यालय वरिष्ठों के (एन N = २०३१) सूचित विषय वस्तु प्रयोग और शैक्षणिक परिणाम पर पृष्ठ-भूमि और मनोवैज्ञानिक विविधता का संबंध के संबंध में प्रस्तावित और परीक्षण किया गया था।

निष्कर्ष:

उक्त अध्ययन ने विषय-वस्तु प्रयोग और शैक्षणिक परिणाम सूचित किए गए। उक्त निष्कर्षों ने संतुलित किया कि अन्तर व्यक्तिगत विविधता ने (अर्थात् स्कूल समायोजन, भूल, माता-पिता और समुदाय के साथ संबंध) प्राथमिकता तौर पर सूचित विषय-वस्तु प्रयोग को प्रभावित किया, तथापि विषय-वस्तु प्रयोग से असंबंधित थे। और पृष्ठ-भूमि, मनोवैज्ञानिक-सामाजिक विविधता और विषय-वस्तु प्रयोग, विद्यार्थी प्रत्यक्षक्षन उनके शैक्षणिक अनुभवों और
भविष्य की आकांक्षाओं के प्रकार के साथ भी संबंधित थे। परिणामों की चर्चा उनके माध्यमिक विद्यार्थियों के साथ कार्यरत स्कूल कार्यकर्ताओं के लिए उन के पत्रकार के शब्दों में 
जरूरी है।

पीटर टाउनसेंड, कैरोलिन बान (2007), अन्तरराष्ट्रीय व्यवसायिक विद्यार्थियों के लिए 
सामाजिक-सांस्कृतिक अनुकूलन के विकास में बहु-सांस्कृतिक अनुभव का संप्रभु, 
अन्तरराष्ट्रीय जर्नल अफ शैक्षणिक मैनेजमेंट, जिल्ड–21, अक्टूबर, प. 194-212।

उद्देश्यः

अपने नये देश में अवधि कर रहे अन्तरराष्ट्रीय विद्यार्थियों के लिए सामाजिक- 
सांस्कृतिक अनुकूलन के विकास में, बहु-सांस्कृतिक अनुभव में सम्बद्धता और संप्रभु का 
मूल्यांकन।

अनुसंधान डिजाइनः

डाटा विश्लेषण में राष्ट्रीय गृह संस्कृति में अथवा राष्ट्रीय गृह संस्कृति के बाहर 
रहनेवालों की कोटियों में, अन्तरराष्ट्रीय व्यवसाय डिग्री (उपाधि) में अवधि कर रहे 
विद्यार्थियों के सामाजिक नए नृत्य, मात्रात्मक, देशान्तर और अनुभागीय अवधि का 
शामिल था। देशान्तरीय, 88 विद्यार्थियों का सेमेस्टर (सात) के प्रारंभ और चार मास बाद नया/चयन किया 
गया। 380 विद्यार्थियों का तीन चर्चा का अनुभाग पार अवधि आस्ट्रेलियाई और मलेसियाई 
कॉम्प्यूटर (प्रांगण) में इन्हीं वही कोटियों में विद्यार्थियों के लिए था।

निष्कर्षः

उक्त विश्लेषण ने समान सिद्ध किया कि सामाजिक-सांस्कृतिक अनुकूलन संख्या की 
तीन या और बहु सांस्कृतिक अनुभव के साथ नकारात्मक संबंध प्रदर्शित करता है परन्तु तीन साल
के अन्त में सकारात्मक वृद्धि और संबंध के साथ इस अवधि के परे विकसित करता है। सामाजिक-सांस्कृतिक अनुकूलन और बहु सांस्कृतिक अनुभव के लिए अंतरराष्ट्रीय गृह के अन्दर अथवा बाहर अभ्यास कर रहे विद्यार्थियों के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं थे।
मेरी आये टेबलर, कैरेन गोल्डबर्ग, लिन्न एम. शोरे, फिलिप लिपका (2008), “सेवा निवृत्ति अपेक्षाओं और सामाजिक सहायता का सेवा निवृत्ति समायोजन पर प्रभाव: एक देशान्तरीय विश्लेषण”, जर्नल आफ मैनोजियरल मनोविज्ञान, जिल्ड-23, अंक-5, पृ. 458-470।
उद्देश्य:
उसका उद्देश्य साढ़े तीन वर्ष और दस मास सेवा निवृत्ति पश्चात् समायोजन पर सेवा निवृत्ति अपेक्षाओं और सामाजिक सहायता के बदलते प्रभावों की परीक्षा करना है।
अनुसंधान डिजाइन:
इस अध्ययन के प्रयोजन के लिए, लेखकों ने सर्वेश्चन पद्धति का प्रयोग किया है। सेवा निवृत्ति-पश्चात् संतुष्टि के तीन पहलुओं: जीवन संतुष्टि, सेवा निवृत्ति संतुष्टि और सामाजिक संतुष्टि को भविष्यवाणी के लिए सेवा निवृत्ति और सामाजिक सहायता संबंधी अपेक्षाओं का प्रयोग किया था।
निष्कर्ष:
परिणामों ने संकेत दिया कि अपेक्षाओं ने सेवा निवृत्ति में पहले और बाद में संतुष्टि की दृढ़ता से और महत्वपूर्ण तौर पर भविष्यवाणी की थी। सामाजिक सहायता समय 2 पर सेवा निवृत्ति संतुष्टि को केवल एक महत्वपूर्ण परिस्थिति थी और सेवा निवृत्ति में सामाजिक और जीवन संतुष्टि से गैर-महत्वपूर्ण संबंध रखती थी।
अन्ना राय (२०११), “शिक्षण में व्यक्तिगत आयाम : विद्यार्थी फीड-बैक (अनुमोदनों के परिणाम की सूचनाओं को कहा महत्व देते हैं)”, शैक्षणिक प्रबंधन का अंतरराष्ट्रीय जर्नल, जिल्द-२५, भाग-४, प. ३५३-३६०।

उद्देश्य:

फीड बैक के बारे में विद्यार्थी क्या सोचते हैं जानना।

अनुसंधान डिजाइन:

माध्यमिक शिक्षा अनुभाग के आरपाय फीड बैक के दृष्टिकोण से निम्न मूल्य निर्धारण के लिए कारणों के अन्वेषण के ब्यादा बढ़े अध्ययन के एक भाग के रूप में संग्रहित आंकड़ा सूचित किए जाते हैं। उक्त ज्ञान बढ़े अध्ययन में शामिल है रोमे और उद के विद्यार्थी फीड बैक प्रश्नावली (एस.एफ.क्यू.) जो फीड बैक के लिए विद्यार्थी प्रत्यक्ष ज्ञान पर मात्रतम आंकड़ा एकत्र करती है, परन्तु इसमें दो अप्रतिबंधित प्रशन भी शामिल हैं जिन से विद्यार्थियों को आपेक्षित किया जाता है लिखित टिप्पणियों दे कि वे क्या विश्वास करते हैं कि फीड बैक महत्वपूर्ण है और वे कैसे पाते हैं कि फीड बैक सुधार किया जा सकता है।

निष्कर्ष:

प्रथम अप्रतिबंधित प्रशन के उत्तरों के मूलभूत करने और ज्ञान बढ़े अध्ययन और इसके निष्कर्षों के प्रसार में टिप्पणियों को देखते हुए फीड बैक के कार्य की सात विभिन्न विद्यार्थियों के खारिजों को उदरण देते हुए विद्यार्थियों के उत्तरों का विश्लेषण प्रस्तावित किया जाता है।

माध्यम, नरीन्द्र कौर, पुष्पिन्दर (२०१०), “संगठनात्मक जलवायु के संबंध में विद्यार्थियों की शैक्षणिक आकांक्षाओं और स्कूल समाजों का अंत्यन”, शिक्षा विभाग, पंजाब युनिवर्सिटी।
उद्देश्य :-

1) स्थिति, स्कूल के प्रकार और लिंग के संबंध में माध्यमिक स्कूल विद्यार्थियों की शैक्षणिक आवश्यकताओं का अध्ययन करना।

2) संगठनात्मक जलवायु, इसके छ संपर्कों के शब्दों में, के संबंध में माध्यमिक स्कूल विद्यार्थियों की शैक्षणिक आवश्यकताओं का अध्ययन करना।

3) संगठनात्मक जलवायु के साथ स्थिति, स्कूल के प्रकार और लिंग का माध्यमिक स्कूल विद्यार्थियों पर पारस्परिक किया प्रभाव का अध्ययन करना।

4) स्थिति, स्कूल के प्रकार और लिंग के संबंध में माध्यमिक स्कूल विद्यार्थियों के स्कूल समायोजन का अध्ययन करना।

5) संगठनात्मक जलवायु इसके छ संपर्कों के शब्दों में, के संबंध में माध्यमिक स्कूल विद्यार्थियों के स्कूल समायोजन का अध्ययन करना।

6) संगठनात्मक जलवायु के साथ स्थिति, स्कूल का प्रकार और लिंग का माध्यमिक विद्यार्थियों के स्कूल समायोजन पर पारस्परिक किया प्रभाव का अध्ययन करना।

7) संगठनात्मक जलवायु इसके छ आयामों के शब्दों में माध्यमिक स्कूल विद्यार्थियों के आपस में स्कूल समायोजन के साथ शैक्षणिक आवश्यकताओं का अध्ययन करना और संबंध की तुलना करना।

निष्कर्ष :

1) शहरी और ग्रामीण स्कूल स्थिति के आरम्भ, सरकारी और वाइपरेट स्कूलों में अध्ययन कर रहे माध्यमिक स्कूल विद्यार्थियों की शैक्षणिक आवश्यकताओं में महत्वपूर्ण अन्तर होगा।
२) माध्यमिक स्कूल विद्यालयों की शैक्षणिक आकांक्षाओं में कोई महत्वपूर्ण लिंग अन्तर नहीं होगा।

३) स्कूल जलवायु यात्रों उच्च अधर्म निम्न, इसके छ संपटकों के अर्थ में समझते हुए माध्यमिक स्कूल विद्यालयों की शैक्षणिक आकांक्षाओं में महत्वपूर्ण अन्तर होगा।

४) माध्यमिक स्कूल विद्यालयों के शैक्षणिक आकांक्षाओं पर संगठनात्मक जलवायु के साथ स्थिति, स्कूल के प्रकार और लिंग का पारंपरिक किया प्रभाव महत्वपूर्ण होगा।

५) शहरी और ग्रामीण स्कूल रिलीज के आधार पर सरकारी और प्राइवेट स्कूलों में अध्यापन कर रहे माध्यमिक विद्यालय विद्यार्थियों के स्कूल समायोजन में महत्वपूर्ण अन्तर होगा।

साथे विश्वास उत्तम, अंसारी, एम. फारुकी (२०१२), "पुने जिला में शहरी और ग्रामीण किशोर विद्यार्थियों के अकादमी उपलब्धि और पुने गए समायोजन कारकों का अध्ययन, युनिवर्सिटी आफ पुने।"

उद्देश्य:

शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में किशोर विद्यार्थियों के आपस में अकादमी उपलब्धि (अ द/ए ए) और समायोजन कारकों (स का/ए एफ) के बीच समायोजन का अध्ययन करना।

उपयुक्त वर्णित विषयों के संबंध में इन दो समूहों के आपस में अन्तरों को नोट किया गया।

प्रस्तुत अध्ययन में मुख्य उद्देश्य थे—

१) शहरी विद्यार्थियों के आपस में ए ए और एएफ के बीच सह-संबंध का अध्ययन करना।

२) ग्रामीण विद्यार्थियों के आपस में ए ए और एएफ के बीच सह-संबंध का अध्ययन करना।
3) शहरी विद्यार्थियों के लिंग आर्पाय ए ए तुलना करना।

4) ग्रामीण विद्यार्थियों के लिंग आर्पाय ए ए तुलना करना।

5) शहरी और ग्रामीण विद्यार्थियों के लिंग और स्थानों के आर्पाय ए ए तुलना करना।

अनुसंधान डिज़ाइन:

शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में किशोर विद्यार्थियों के आपस में अकादमी उपलब्धि (ए ए) और समायोजन कारकों (ए एफ) के बीच संबंध का अध्ययन करने के लिए दो समूह बनाये गए थे, उपर्युक्त वर्णित विविधताओं के संबंध में इन दो समूहों में अन्तर को नोट किया गया था। इन धारणाओं का पुनः जिले में शहरी क्षेत्र (एन = १२४) और ग्रामीण क्षेत्र (N = १९५) के गैर-अनुदान प्रांत अंग्रेजी माध्यम स्कूलों के दसवीं वर्ग / कक्षा के किशोर विद्यार्थियों से संग्रहित आंकड़ों के आधार पर परीक्षण किया गया था। उक्त अध्ययन के लिए प्रयुक्त औजार एम.एन. पालसा ने द्वारा समायोजन साधन (इन्फ्रास्ट्रैक्चर) था। सांख्यिकी की औजार / साधन जैसे वर्णनात्मक सांख्यिकी, पीयरसन का प्रोडक्टमॉमेंट सह-संबंध और टी-सांख्यिकी प्रयुक्त किए गए थे।

निष्कर्ष:

परिणामों ने दर्शाया कि शहरी और ग्रामीण किशोर विद्यार्थियों में ए ए नकारात्मक रूप से ए एफ से सहसंबंधित है। उक्त ए एफ एक दूसरे के साथ सकारात्मक रूप से सहसंबंधित है।

भारती रमन (२००४), “परीक्षा अवधियों के दौरान उच्च और निम्न बुद्धिमान विद्यार्थियों के नमूनों का समायोजन”, पी.एच.डी. गुजरात युनिवर्सिटी।

परिकल्पना:

1) उच्च और निम्न बुद्धिमान विद्यार्थियों के गृह समायोजन के अर्थ में अन्तर हो सकता है।
2) उच्च और निम्न बुद्धिमत्ती विषयों के गृह समायोजन के अर्थ में अन्तर हो सकता है।
3) उच्च और निम्न बुद्धिमत्ती विषयों के सामाजिक समायोजन के अर्थ में अन्तर हो सकता है।
4) भावनात्मक समायोजन के ग्राफ पर उच्च और निम्न बुद्धिमत्ती विषयों के बीच अन्तर होगा।
5) स्कूल समायोजन के माप पर उच्च और निम्न बुद्धिमत्ती विषयों के बीच अन्तर होगा।
6) सर्वोच्च समायोजन के अर्थ में अन्तर होगा।

अनुसंधान डिजाइन:

उक्त अध्ययन के लिए १०२ विद्यार्थियों का एक नमूना चुना गया था। ये विद्यार्थी गांधीनगर स्कूल परीक्षा बोर्ड, गांधीनगर द्वारा संचालित की जानेवाली अपनी मैक्सिक्यूलेशन परीक्षा के लिए तैयार कर रहे थे, इनमें से ५० लड़के और ३२ लड़कियाँ थीं, उनकी औसत आयु १४.३ वर्ष थी।

प्रस्तुत अध्ययन में बुद्धिमत्ता को स्वतंत्र विविध के रूप में व्यवहार किया गया है और विभिन्न प्रकार के समायोजनों को स्वतंत्र विविधों के रूप में व्यवहार किया गया है। स्वतंत्र विविधों के दो स्तरों (आर्थिक, उच्च और निम्न) के आधारित विविधों पर संस्था को परीक्षा करने के लिए, एक सरल दो समूह अंतरिक्षित डिजाइन को अपनाया गया था।

सामान्य बुद्धिमत्ता परीक्षण और मान्यतात्मक समायोजन साधन (इंटरन्टेर) जैसे औजार / साधन इस अध्ययन में प्रयुक्त किये गए थे।
सामान्य बुद्धिमानी परीक्षण : यह परीक्षण मोहिसन (१९९०) द्वारा स्कूल जानेवाले बच्चों और किस्मती में सामान्य बौद्ध शिक्षा का निर्धारण करने के लिए विकसित और संरचित किया गया था।

माध्यमिक समायोजन साधन (एच एम आई) : यह साधन सिंह और सेनगुप्ता (१८८७) द्वारा विकसित किया गया था जो पर, स्वास्थ्य, भावनात्मक और स्कूल जैसे क्षेत्रों में माध्यमिक स्कूल विद्याधिकारियों के समायोजन को निर्धारण करता है।

चुने गए नमूनों को सामान्य बुद्धिमत्ता परीक्षण में पहले प्रबंधित किया गया था। इस परीक्षण का नियम पुस्तक (मैनुअल) में दिए गए मानक अनुदेशों के अनुसरण में एक समय में १५५ विश्लेषण के छोटे समूह में प्रबंधित किया गया।

चयनित नमूनों को पहले सामान्य बुद्धि परीक्षण की व्यवस्था की गई। नियम पुस्तक (मैनुअल) में दिए गए मानक अनुदेशों के अनुसरण में इस परीक्षण को १५५ विश्लेषण के छोटे समूह में एक समय में व्यवस्था की गई। १०२ नमूनों द्वारा प्रायोगिक संख्या के माध्यम / मिट्टियार (माध्यम = १२) के आधार पर २ समूहों को रचना की गई – माध्यम और मध्यम से एपिक (एपिक =४६) अंकों की तुलना करते हुए समूह – पहला समूह बुद्धि परीक्षण अंकों में ऊंचा था और उच्च बुद्धिमान समूह प्रकाशित जाता था और बाद का समूह बुद्धि परीक्षण अंकों में निम्न था और निम्न बुद्धि समूह पुकारा जाता था।

बाद में, नियम-पुस्तक (मैनुअल) में दिए गए मानक अनुदेशों के अनुसरण में माध्यमिक स्कूल समायोजन साधन (एच एम आई) से समय में १५ से २० के समूह में नमूने की व्यवस्था की गई, तदनुसार समायोजन के संरचित सुन्दर क्षेत्रों के लिए एचएसएआई को अंक प्राप्त हुए।
निष्कर्ष :

अध्ययनों ने प्रकट किया कि उच्च और निम्न बुद्धिमान विषयों में गुह समायोजन के अर्थ में अन्तर है।

कुमारी के. (१९९५), "किशोरों में सृजनात्मक, बुद्धिमत्ता, समायोजन और मूल्य नमूने के आपस में संबंध का अध्ययन," भी.एच.डी. मनोविद्या, गुजरात विश्वविद्यालय।

उद्देश्य :-

(१) सृजनात्मक और बुद्धिमत्ता, सृजनात्मक और समायोजन तथा सृजनात्मक और मूल्य नमूने के बीच सकारात्मक और महत्वपूर्ण संबंध है।

(२) फैकल्टीवार, कक्षा / वर्ग बार, और आयु अन्तर सृजनात्मक में कोई सेक्स (काम) नहीं है।

(३) मूल्य नमूने समायोजन के स्तर और बुद्धि के स्तरों से संबंधित नहीं है।

(४) समायोजन के स्तर बुद्धि की मात्रा पर निर्भर नहीं है।

(५) सृजनात्मक की मात्रा किशोरावस्था में बढ़ती है।

(६) समायोजन का स्तर किशोरावस्था में बढ़ता है।

(७) सृजना नमूने किशोरावस्था में बदलते है।

अनुसंधान डिजाइन :

उक्त नमूना में १००० व्यक्ति (५०० लड़कियां और ५०० लड़के) शामिल थे। उनकी आयु १३ से १९ वर्ष की श्रेणी में थी। वे कक्षा ग्यारह और बारह की थी, बुद्धि आर के टेंडन्स द्वारा विकसित सामूहिक मानसिक योग्यता परीक्षक (२१७०) की सहायता द्वारा विकसित व्यक्तिप्रकाश प्रजननवती की सहायता से मापा गया था। उ म आई की परीक्षण पुनरीक्षण,
अर्थ विभक्त, और के. आर. २० विश्वसनीयता गुणांक समझ ०.८७, ०.८९ और ०.९० थे।
आर. पी. भटनागर और आर.के. टूंडन द्वारा गुणांकों का 'आल्पोर्ट–बर्नार्ड अध्ययन' का
भारतीय अनुकूलन गुणांकों के माप के लिए प्रयोग किया गया था। उक्त आंकड़ों का दी-
परीक्षण के रूप में सहसंबंध की सहायता से विश्लेषण किया गया था।

विषयः

(१) सृजनात्मक और बुद्धिमत्ता, सृजनात्मक और समाजोधित तथा सृजनात्मकता और समूहों
के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं था।

(२) सृजनात्मकता के क्षेत्र में सेक्स (काम) अन्तर विश्लेषण थे।

(३) एक वर्ष की शिक्षा ने सृजनात्मकता के विकास पर महत्वपूर्ण अंतर नहीं रखा था,
जबकि दो वर्ष अथवा अधिक के अन्तर ने सृजनात्मक पर कुछ महत्वपूर्ण अन्तर किया
है।

(४) सृजनात्मक के क्षेत्र में आयु अन्तर विश्लेषण थे और यह महत्वपूर्ण था जब अन्तिम दो
वर्ष में अन्तर था।

(५) आधिकारिक और धार्मिक मूल्य समाजोधित के स्तर से अल्पधिक संबंधित थे, जबकि
समाजिक और नैतिक जैसे मूल्य-समाजोधित के स्तर के साथ केवल अल्प मात्रा में
संबंधित थे।

(६) बुद्धि किशोरों में मूल्योंक फ्रांसीसी पटरी अंकन में कोई स्थान नहीं रखती थी और इस
प्रकार विश्लेषण मूल्य बुद्धिमत्ता से संबंधित थे।

(७) समाजोधित का स्तर बुद्धिमत्ता की मात्रा से महत्वपूर्ण से संबंधित था।

(८) सृजनात्मक की मात्रा किशोरों का अर्थात् १३ से १८ वर्ष के दौरान बढ़ गई।
(१) समायोजन का स्तर किशोरावस्था में बढ़ता हुआ पाया गया।

(२) आयु बुद्धिमत्ता के बढ़ने में प्रभावित करते हुए पाई गई और बिन्दु तक पहुंच गई जिसकी परिपक्वता १८ वर्ष थी।

(३) किशोरावस्था में आयु में बढ़ते मूल्य नमूनों को महत्त्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया, परंतु इस प्रभाव पुरुष और महिलाओं के संबंध में इसका प्रभाव था।

(२) उक्त अभ्यास ने संकेत दिया कि सर्जनात्मकता और बुद्धिमत्ता और सर्जनात्मकता, और समायोजन और सर्जनात्मकता और मूल्य नमूनों, आधिक और धार्मिक मूल्य समायोजन के स्तर केवल अल्प रूप से संबंधित थे। समायोजन का स्तर बुद्धिमत्ता की मात्रा के साथ महत्त्वपूर्ण से संबंधित था। समायोजन का स्तर किशोरावस्था के दौरान बढ़ते हुए पाया गया।

रामी. एस. (१९९६), “सर्जनात्मकता, स्वयं जागरूकता और आत्म समायोजन के बीच संबंध का एक अभ्यास” पी.एच.डी. शिक्षा, एच.एच.एच.पी.।

उद्देश्यः

(१) सृजनात्मकता का अभ्यास करना।

(२) स्वयं जागरूकता

(३) विश्वविद्यालय विद्यार्थियों का आत्म समायोजन।

निष्कर्षः

(१) सृजनात्मकता और आत्म जागरण के विभिन्न आयामों के बीच और उन आत्म जागरण का सर्जनात्मकता के बीच प्राप्त गुणांक और सहसंबंधों सकारात्मक और महत्त्वपूर्ण थे।
अद्यापि कि बहुत अधिक नहीं, यह संकेत देता है कि रचनात्मक आत्म जागरूक थे और आत्म जागरूक व्यक्ति प्रवाही, लचीले और मूल थे।

(२) सृजनात्मकता, पूर्ण आत्म समायोजन और रचनात्मकता के इसके विभिन्न आयामों सकारात्मक और महत्वपूर्ण थे जैसे स्वयं समायोजित और विभिन्न आयामों में भी, परंतु अधिक नहीं, यह संकेत देता है कि रचनात्मक आत्म समायोजित थे और आत्म समायोजित प्रवाही, लचीले और मूल थे।

(३) उच्च रचनात्मकता और आत्म जागरूकता के बीच और यह कि निम्न रचनात्मकता और निम्न सेक्स जागरण के बीच संबंध सकारात्मक और बहुत महत्वपूर्ण थे, यह संकेत देता है कि अधिकांश उच्च रचनात्मकों के आत्म समायोजित और कुछ के इस संबंध में पीछे रहने की संभावना है परंतु लगभग सभी निम्न रचनात्मक वालों के आत्म समायोजन में नगण्य होने की संभावना है।

(५) उक्त अखंडने संकेत दिया कि रचनात्मकता, पूर्ण आत्म समायोजन और रचनात्मकता के इसके विभिन्न आयाम सकारात्मक और महत्वपूर्ण थे जैसे स्वयं समायोजन और विभिन्न आयामों में भी परंतु उच्च नहीं। उच्च रचनात्मकता और आत्म जागरूकता और यह भी कि निम्न रचनात्मकता और निम्न सेक्स जागरूकता के बीच संबंध सकारात्मक और अति महत्वपूर्ण था यह संकेत देता है कि जबकि अधिक मात्र उच्च रचनात्मकों के स्वयं समायोजित होने और कुछ के इस संबंध में पीछे होने की संभावना है परंतु लगभग सभी रचनात्मकों के स्वयं समायोजन में नगण्य होने की संभावना है।

80
शर्मा एम. के. (१९९४), “रचनात्मकता, समाजोद्योग और विद्वानपूर्ण उपलब्धि का सामाजिक-सांस्कृतिक सहसंबंध”, पी.एच.डी. मनोविज्ञान, सौराष्ट्र विश्वविद्यालय।

उद्देश्य:

(१) महत्वपूर्ण पहलूओं जैसे रचनात्मकता संघटको, समाजोद्योग और विद्वानपूर्ण उपलब्धि पर सांस्कृतिक नियतिविद, धर्म और सामाजिक आर्थिक स्थिति के संबंध का निर्धारण करना, और,

(२) सभी तीनों अध्यक्षों के क्षेत्रों में सभी तीनों विभिन्नों के आपस में पारस्परिक किया का निर्धारण करना।

उक्त नमूनों में ३०० व्यक्ति शामिल थे एसएस, जाति और धार्मिकों / विद्वानों के विभिन्न स्तरों से संबंधित रहते थे। यह स्तरबद्ध निष्कर्ष नमूनचयन पट्टि द्वारा चुना गया था।

एम. एस. चौहान और ए.डी. शर्मा द्वारा सांस्कृतिक नियतिविद तुल्य / माप एस.पी. कुरुशेश द्वारा सामाजिक आर्थिक स्थिति माप (शाही) एन.एस. चौहान और जी.पी. तिवारी द्वारा रचनात्मकता परीक्षण और एक.पी. शिस्ता और अन्य द्वारा समाजसर्वसंधिम अध्ययन में प्रयोग गिते गए थे और समान कोष आकार गुणविन्दुयों डिजाइन का प्रयोग करते हुए विश्लेषण की सहायता से आंकड़ा विश्लेषण किया गया था।

निष्कर्ष:

(१) सांस्कृतिक अनुकूलता ने मुस्लिमों में रचनात्मक उत्पादन और विद्वानपूर्ण उपलब्धि को बढ़ाया।

(२) नन्म एसएस समूह की अनुकूलता ने गुह, स्वास्थ्य और शैक्षणिक व्यवसाय को बढ़ाया।
(3) अपनी (ईसाई) संस्कृति के विद्रोही सामान्य रूप में अधिक मौलिक थे, बेहतर रचनात्मक उत्पादन रखते थे, और विभिन्न व्यवहारों के अन्तर्गत गृह, स्वास्थ्य और जीवन के भावनात्मक और शिक्षणात्मक व्यवसायों में बेहतर प्रदर्शन किया।

(4) हिंदु मुसलमानों को तुलना में मौलिकरूप से और लचीली रूप में उच्च रचनात्मक उत्पादन रखते थे। मध्यम एसईएस के मुस्लिमों को तुलना में उच्च एसईएस के हिंदू अधिक रचनात्मक उत्पादन, मौलिकता और लचीलापन रखते थे, मध्यम एस ई एस के हिंदू इस समान स्थिति के मुस्लिमों को तुलना में अधिक मौलिकता और लचीलापन रखते थे, और निम्न एसईएस के हिंदू मुस्लिमों को तुलना में अधिक मौलिक थे।

(5) उच्च एसईएस के हिंदू उक समान स्थिति मुस्लिमों को तुलना में अधिक रचनात्मक उत्पादन रखते थे।

(6) उच्च एसईएस के किशोरों उच्च रचनात्मक उत्पादन और विद्वानगृप्त उपलब्धि रखते थे, उन्होंने रचनात्मक उत्पादन, मौलिकता और लचीलापन को निम्न एस ई एस मुस्लिमों की तुलना में हिंदू और मुसल्मानों दोनों में बढ़ाया, निम्न एस ई एस लोगों की तुलना में धर्म के बावजूद वे अधिक मौलिक थे, वे गैर-धर्मनागर्म (ईसाई), मौलिकता रखते थे और निम्न एसईएस के लोगों की तुलना में गृह, स्वास्थ्य और भावनात्मक व्यवसायों में बेहतर समायोजन प्रदर्शित करते हैं।

(7) मध्यम एसईएस के किशोरों ने सहज प्रवाह और मौलिकता को बढ़ाया, इसके मध्यम स्तर के बाद गृह समायोजन को कम किया और मध्यम स्तर तक भावनात्मक और शिक्षणात्मक व्यवसायों में बेहतर समायोजन प्रदर्शित किया।
(8) निम्न एसईएस के किशोरों उच्च एसईएस के लोगों की तुलना में गृह समायोजन में बेहतर थे। वे अनुकूलता के साथ रंगे हुए थे और उच्च एसईएस के लोगों की तुलना में गृह, स्वास्थ्य और भावनात्मक व्यवसायों में बेहतर समायोजन प्रदर्शन किया। वे मध्यम एसईएस के लोगों की तुलना में वे भावनात्मक और शिक्षणात्मक व्यवसायों में बेहतर समायोजित पाए गए।

(9) यह संकेत देता है कि निम्न एसईएस समूह की अनुकूलता के गृह, स्वास्थ्य और शिक्षणात्मक व्यवसायों में समायोजन को बढ़ाया। अपनी संस्कृति के विद्वानों सामान्य अधिक कृतिक थे, बेहतर अधिक रचनात्मक उत्पादन रखते थे, और विभिन्न व्यवहारों के अंतर्गत गृह, स्वास्थ्य भावनात्मक और शिक्षणात्मक व्यवसायों में बेहतर समायोजन प्रदर्शित किया।

मोहनी (१९९६) "प्राथमिक स्कूल शिक्षा के कक्षा कमरों में विद्यु और व्यक्तिगत समायोजन पर चिन्ता का प्रभाव", पी.एच.डी. शिक्षा, गुजरात विश्वविद्यालय।

उद्देश्य:

(१) प्राथमिक विद्यालय बच्चों में स्थिति आभास चिन्ता के संबंध का अनुसंधान करना।

(२) शिक्षणों की चिन्ता और उनकी समायोजन बुद्धि और उपलब्धि की बीच संबंध खोजना।

(३) अनुदेशात्मक सामग्री व्यवस्थित करना और कक्षा कमरों में शिक्षण की चिन्ता को कम करने के लिए उनका प्रयोग करना।

(४) चिन्ता, समायोजन, बुद्धिमत्ता और उपलब्धि पर व्यवहार के प्रभाव को मालूम करना।
अनुसंधान डिजाइनः

इसमें सम्बलपुर कार्यक्रम के दो प्राथमिक विद्यालयों से निर्देशयुक्त से चयन किए गए कक्षा 3 के 6 तक में से प्रत्येक से 30, १५० विद्यार्थी शामिल थे। आंकड़ा संग्रहण के लिए, औजार निम्नलिखित थे:

(1) टिप्पणिवस्था, इ, एस. द्वारा बच्चों के लिए अभाव स्थिति चिंता साधन (इन्टरनेट) (एसटीएआईएस) का उद्देश्य रूपान्तर।

(2) सारसोन, इटी एसल द्वारा विकसित बच्चों के लिए सामान्य चिंता माप (जीएससी) का उद्देश्य रूपान्तर।

(3) शेष उद्देश्य के लिए ३७ बच्चों के रूप में कक्षा 3 से कक्षा 6 प्रत्येक से ३१७ नियंत्रण अधिक और प्रयोगात्मक समूह दो अलग विद्यालयों में मौजूद थे। इन उद्देश्यों के लिए, स्टैडस (एसटीएआईएस) का उद्देश्य रूपान्तर और रान्य कर्ल्ड, प्रगतिशील मैट्रिकेशन, पारिपूर्ण इटी एसल का पूर्व-विश्लेषण समायोजन माप, उपलब्धि परीक्षण और शिक्षक-निपटार अधिकारियों के उद्देश्य रूपान्तर आंकड़ा संग्रहण प्रयोजनों के लिए किया गया। पूर्व-परीक्षण के बाद चिंता कम करने का प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू हुआ। उक्त प्रशिक्षण में स्कूलों में सभी पंच प्रयोगात्मक समूहों का (३०) कहानियां सुनाएं द्वारा अनुदेश शामिल थे। पंद्रह कहानियां स्थिति चिंता को प्रकट करनेवाली स्थितियों के आधार पर चुनी गईं थी और शेष स्थिति चिंता को प्रकट करनेवाले व्यवहारों पर आधारित थी। प्रशिक्षण का किया प्रयोगात्मक स्कूलों में एक मास तक चलाया गया। उक्त पूर्व-परीक्षण और परीक्षण पश्चात नियंत्रण समूह अभ्यास में प्रयुक्त किए गए।
संबंध विश्लेषण, विवाद / विसंगति का विश्लेषण और सह-विवाद / विसंगति का विश्लेषण आंकड़ा विश्लेषण के लिए प्रयुक्त किए गए थे।

निष्कर्ष:

(1) चित्र माप, ए-ट्रेड, ए-स्टेट, जीएससी और टीएससी अर्थ विश्लेषनीयता विख्यात की उच्च अंश (डिग्री) दर्शाता है।

(2) प्राथमिक विद्यालय स्तर पर बच्चों ने आधार में और स्थिति चिन्ता का अनुभव स्पष्ट तौर पर प्रदर्शित किया है। बच्चों के आपस में आधार चिन्ता संबंधित शिक्षण स्तरों पर दिखाई दी।

(3) विभिन्न शैक्षणिक स्तरों पर बच्चों के इन चिन्ता प्रशंसकों के बीच अंतर भी था।

(4) बच्चों के जी ए एस सी प्रशंसकों उनके टी ए एस सी प्रशंसकों की अपेक्षा अच्छा अधिक है।

(5) सामान्य और परीक्षण चिन्ता और शैक्षणिक स्तर पर कोई पारस्परिक क्रिया नहीं थी।

(6) आधार और स्थिति चिन्ता दोनो प्राथमिक विद्यालय बच्चों के समायोजन के साथ महत्वपूर्ण नकारात्मक संबंध रखते थे।

(7) प्राथमिक विद्यालय के बच्चों के आधार चिन्ता प्रशंसक और बुद्धिमत्ता परीक्षण प्रशंसक के बीच निम्न नकारात्मक सहसंबंध विद्यमान है।

(8) आधार और स्थिति चिन्ता अकादमी उड़लबंध के साथ नकारात्मक रूप से संबंधित थे।

(9) प्राथमिक समूह का चिन्ता स्तर अन्तर व्यवधान है।
(१०) अन्तर्व्यवस्थान कार्यक्रम ने उनके चित्त के स्तर को कम करते हुए विद्यालय के माध्यमिक स्तर पर बच्चों के समायोजन और अकादमिक कौशल को विकसित किया है।

(११) इसने संकेत दिया कि आधार और स्थिति चित्त पर दोनो प्राथमिक विद्यालय के समायोजन के साथ महत्वपूर्ण नकारात्मक संबंध रखते थे। अन्तर्व्यवस्थान कार्यक्रम ने विद्यालय के माध्यमिक स्तर पर उनके चित्त के स्तर पर कम करते के द्वारा समायोजन और अकादमिक कौशल को विकसित किया है।

गार्तिया आर. (१९९९), “किशोरों की मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं और आत्म-संकल्पना”, पी.एच.डी. शिक्षा, नागपुर विश्वविद्यालय।

उद्देश्य:

(१) किशोरों की मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं का अध्ययन करना।

(२) किशोरों का समायोजन का अध्ययन करना।

(३) किशोरों की मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं, आत्म धारणा और समायोजन के बीच संबंध का अध्ययन करना।

अनुसंधान डिजाइन:

इस में वर्णनात्मक सर्वेक्षण अनुसंधान पद्धति और आक्रिमिक निर्देश नमूनाचयन प्रयुक्त किया गया था। उक्त नमूने में ७०० किशोर शामिल थे जिनमे से ३५० लड़के और ३५० लड़कियाँ जो १५ से १८ वर्ष के समूह की थी और नागपुर के विभिन्न म्यूनिसिपल वाड़ों में स्थित माध्यमिक विद्यालयों और आठ ज्युनियर कॉलेजों में अध्ययन कर रही थी। प्रत्येक संस्थान में, तथापि परीक्षण के लिए चुने गए विभाग आक्रिमिक बिना उद्देश्य थे।
एवेन एडवार्ड्स द्वारा एडवार्ड्स व्यक्तिगत अभिमान सूची, प्रतिभादेव द्वारा व्यक्तिव वर्ल्ड सूची, बेल की समायोजन इन्जीनियरी, भागिया की समायोजन इंजीनियरी, देव जोगवार और शेखर द्वारा तैयार सामाजिक आधिक स्थिति अवन्तकी और अवन्तिकारक द्वारा तैयार की गई। लड़कों की प्रश्नाबली और लड़कियों की प्रश्नाबली प्रयुक्त की गई थी। आंकिका के विश्लेषण के लिये प्रयुक्त सांख्यिकीय तकनीकों थी दो-परीक्षण और अन्तर और सहसंबंधों का दो मार्ग विश्लेषण।

निष्कर्ष:
(१) किशोरों के अंतर आवश्यकता अंतर महत्त्वपूर्ण थे, मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं में अन्तर, अपमान, सहसंबंध, आदेश, प्रदर्शण, स्वाभाविक, विशिष्टत आचरण, अंतराभास और भिन्न लिंगभेद सिवाय परिवर्तन, पाल्पशेष, संवेदन, प्रभाव और मामलों में।
(२) किशोरों का गुह, स्वाभाविक, सामाजिक, भावनात्मक स्कूल क्षेत्रों में समायोजन सभी मामलों में महत्वपूर्ण रूप से भिन्न था सिवाय गुह और समायोजन में।
(३) समायोजन के सभी पांच क्षेत्रों से विश्लेषण समायोजन सबसे अधिक संतोषजनक था इसके बाद कमगर स्वाभाविक, गुह, भावनात्मक और समायोजन आते हैं।
(४) उक्त अध्ययन से यह पाया गया कि किशोर लड़को का सामाजिक और भावनात्मक समायोजन किशोर लड़कियों की अपेक्षा अधिक संतोषजनक था।

मिश्रा एम.टी. (१९९५), "भावनात्मक विश्लेष किशोरों के प्राथमिक के प्रति व्यक्तिव समायोजन और प्रवृत्ति", पी.एच.डी. शिक्षा, गुजरात विश्वविद्यालय।
उद्देश्य:

भावनात्मक विशिष्ट विद्याध्यायों के आपस में प्राधिकार से प्रति व्यक्ति और समायोजन और प्रवृत्ति का अध्ययन करना।

अनुसंधान डिजाइन:

उक्त अध्ययन के नमूने में माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययन कर रहे 200 भावनात्मक विशिष्ट विद्याध्यायों शामिल थे। उनमें से 130 पुरुष और 70 महिला विद्याध्यायों थे। प्रवृत्ति और भावनात्मक विशिष्टता के बारे में सूचना स्वयं बनायी हुई प्रस्तावनाती थी। संगठन की गई थी।

समायोजन के निर्धारण के लिए देशाई समायोजन इन्जिनियरिंग (साधन) प्रयुक्त की गई थी।

निष्कर्ष:

(1) भावनात्मक विशिष्ट विद्याध्यायों उनके समायोजन के स्तर महत्वपूर्ण रूप से भिन्न नहीं थे।

(2) विभिन्न आयु समूहों से संबंधित भावनात्मक विद्याध्यायों उनके व्यक्तिवात समायोजन और प्रवृत्ति महत्वपूर्ण से भिन्न थे।

महेश्वरि आरा (२००१), "अहमदाबाद के माध्यमिक विद्यालय के विद्याध्यायों के समायोजन, सामाजिक, आर्थिक और लिंग के संबंध में अतिम संकेतन का अध्ययन", पी.एच.डी. मनोविज्ञान, गुजरात विश्वविद्यालय।

परिकल्पना:

(1) माध्यमिक विद्यालय विद्याध्यायों के आपस में आत्म धारणा और समायोजन के बीच एक महत्वपूर्ण संबंध है।

(2) माध्यमिक विद्यालय विद्याध्यायों के बीच आपस में आत्म-धारणा और सामाजिक आर्थिक स्थिति के बीच महत्वपूर्ण संबंध है।
(3) माध्यमिक विद्यालय विद्यार्थियों के लड़कों और लड़कियों के आत्म-धारणा के बीच महत्वपूर्ण अन्तर है।

अनुसंधान डिजाइन:

अहमदाबाद के 20 स्कूलों के संख्या 9 की 300 लड़कियों और 300 लड़कों को चुना गया था। आंकड़ा अनुसंधानकार्यों द्वारा विकसित आत्मधारणा इन्भेंटरी (साधन), समायोजन के लिए देसाई ओजर और कुलश्रेष्ठ द्वारा सामाजिक और आर्थिक स्थिति का प्रयोग करते हुए संग्रह किए गए थे। आंकड़ा विश्लेषण के लिए उत्पादन महत्व सहसंबंध, टी-परीक्षण प्रयुक्त किए गए थे।

निष्कर्ष:

(1) लड़कों की आत्मधारणा सामाजिक समायोजन के साथ सकारात्मक रूप से और महत्वपूर्ण रूप से संबंधित थी। जबकि लड़कियों की आत्मधारणा पूर्ण समायोजन के साथ सकारात्मक रूप से और महत्वपूर्ण रूप से संबंधित थी।

(2) बौद्धिक, आत्मधारणा दोनों लिंगों में अकादमी उपलब्धि के साथ सकारात्मक और महत्वपूर्ण रूप से संबंधित थी।

(3) लड़कों और लड़कियों पूर्ण आत्म-धारणा पर महत्वपूर्ण रूप से भिन्न थे।

सिन्हा एनएम. (2002), “विशेष अनुवाद, स्नायुरोगतिकता (न्युरोडिस्क्लेश) और आदिवासी युवकें दा समायोजन का एक तुलनात्मक अध्ययन” गुजरात मनोविज्ञान, एचएनजीयु।

परिकल्पना:

(1) शहरी युवक विशेष अनुवाद पर अधिकतम अंक प्राप्त करेंगे।
(2) पुरुष युवक स्त्री युवतियों की तुलना में विशेष अनुवाद पर अधिक और खायुगोगात्मकता पर कम अंक प्राप्त करेंगे।

(3) शहरी युवक ग्रामीण युवक की अपेक्षा पूर्ण-समायोजन पर अधिक अंक प्राप्त करेंगे।

(4) पुरुष महिलाओं की अपेक्षा पूर्ण समायोजन पर अधिक अंक प्राप्त करेंगे।

अनुसंधान डिजाइन:

उक्त अभ्यास में लिंग की दो श्रेणियाँ (पुरुष / स्त्री) और क्षेत्र की दो श्रेणियाँ (ग्रामीण / शहरी) के साथ दो मार्ग (२ × २) गुणराशि डिजाइन विनियोजित की गई। सतर्क मूल्य निरूपण नमूना तकनीक के द्वारा ३०० आदिवासी विद्यार्थी चुन गए थे। पूर्ण नमूने में गुजरात के क्षेत्रों से १५ से २५ वर्ष की आयु श्रेणी के साथ ३०० व्यक्ति शामिल थे। वे ऐसे संख्यात्मक इन्जेंयर्स (साधन) १९६४, और पेटेल समायोजन इन्जेंयर्स (१९६७) द्वारा प्रशासित किए गये थे।

निष्कर्ष:

(१) शहरी युवकों को अनुकूल साधनों के साथ विशेष अनुवाद के महत्वपूर्ण सहसंबंध के रूप में क्षेत्र प्रकट हुआ।

(२) शहरी युवकों को अनुकूल साधनों के साथ समायोजन के महत्वपूर्ण सहसंबंध के रूप में क्षेत्र प्रकट हुआ।

(३) युवतियों के अनुकूल साधनों के साथ विशेष अनुवाद के महत्वपूर्ण संकल्प के रूप में लिंग प्रकट हुआ।

(४) ग्रामीण युवकों के मामले में विशेष अनुवाद, खायुगोगात्मकता और समायोजन के पहलू अन्य विविधताओं के साथ सकारात्मक रूप से सह-संबंध थे।
5. शहरी युवकों के मामले में उपलब्धि उत्पर्वणा माता पिता के समायोजन के साथ सकारात्मक रूप से संबंधित थी।

पटेल आर.के. (2006), "कालेज विद्यार्थियों की उनके बुद्धि और समायोजन के संदर्भ में मूल्य" पी.एच.डी. सोरास्ट्र विश्वविद्यालय।

उद्देश्य:

समायोजन और बुद्धि की गुणवत्ताओं और विकासशील मूल्यों पर उनका संबंध का अध्ययन करना।

अनुसंधान डिजाइन:

मूल्य परीक्षण, समूह बुद्धि परीक्षण और समायोजन इन्जेंयरी अपनाए गये थे।

निष्कर्ष:

1. शिक्षकों की भूमिका परम्परागत और औद्योगिक समानों के बिल्कुल भिन्न थी।

2. विज्ञान और तकनीकी के क्षेत्र में तीन विकास के संतोष में सामाजिक बदलाव के एजेंज और शैक्षिक विचारों के नव निर्माता, जिन्होंने समायोजन में सहयोग की, भूमिका शिक्षक रखते थे।

3. उक्त शिक्षण अनुभव उनके कक्षा कमरों में व्यवहार को महत्वपूर्ण दंग से प्रभावित नहीं किया। तरह शिक्षकों को उनके विद्यार्थियों द्वारा बुद्धि शिक्षकों, जिन्होंने समायोजना में सहयोग की है, की अपेक्षा बेहतर दंगेस्क्लू और समुदाय के बीच मित्र, मार्गदर्शक, मूल्यांकन और सम्पर्क अधिकारियों के रूप में उनकी भूमिका निभानेवाले के रूप में समझा।
(४) कक्षा कमरों में पुरुष शिक्षकों के संबंध में विद्यार्थियों समझ धारणाएँ महिला शिक्षकों
के कक्षा कमरों के संबंध में उनकी समझ धारणाएं बेहतर थी।

भद्र एम. के. (२००४), "भारती परिस्थितियों के जीवन के मूल्यों में संदर्भ में किशोरों का
समायोजन", पी.एच.डी., आगरा विश्वविद्यालय।

उद्देश्य:

(१) आगरा के किन्नर और वरिष्ठ कालेजों की सामाजिक और व्यक्तिगत पृष्ठभूमि का
अध्ययन करना।

(२) दोनों लिंगों के किशोरों द्वारा कालेजों में उनके अन्तर व्यक्तिगत संबंध में सामान की
जानेवाली समस्याओं के स्वभाव का अध्ययन करना।

(३) उन समस्याओं के स्वभाव को खोजना जो किशोरों ने अपने दैनिक जीवन में, गृह और
कालेज में सामाजिक, व्यक्तिगत और भावनात्मक समायोजन के संबंध में सामना किया
है।

अनुसंधान की डिजाइन:

आगरा से निर्द्देश्य नमूनाचयन द्वारा छः सौ किशोरों को चुना गया था। नमूने में ६००
किशोर (३२० लड़के और २८० लड़किया) १५ से २० वर्ष के शामिल थे। आंकड़ा संग्रह करने
के लिए प्रस्तावनाली, साक्षात्कार सारणी, और समूह चर्चा प्रयुक्त किए गए। आंकड़ा का
विस्तारण वर्णनात्मक प्रतिशत और ची-स्कवायर परीक्षण प्रयोग द्वारा किया गया।

निष्कर्ष:

(१) किशोरों को कई बार प्रोडो को रूप में और कई बार बच्चों जैसे व्यवहार किया गया।
(2) लड़कियों बच्चों जैसे व्यवहार किए जाने के लिए अधिक जिम्मेदारी थी और उन्हें विचार और व्यवहार की स्वतंत्रता नहीं प्रदान की गई जो समायोजन के अभाव के प्रति ले गया।

(3) यह पाया गया कि परिवारिक वातावरण लड़कियां के लिए भारतीय पर्यावरण में अधिक तनावपूर्ण और असंतुष्ट था जो समायोजन के अभाव के प्रति ले गया।

(4) बहुत से परिवारों में मातापिता लड़कों के प्रति अधिक अनुकूल तौर पर प्रवृत्त थे जो समायोजन के अभाव के प्रति ले गया।

(5) किशोरों के बड़े बहुमत ने सहरीविखण्ड संस्थानों और दोनों लिंग के साथ मिलींड दावों को वरीयता देते हैं।

(6) लड़कियों को उनके मातापिता के द्वारा देर तक घर के बाहर रहने की अनुमति नहीं दी जाती है।

(7) लड़कियों और लड़कों का एक बड़ा बहुमत विरुद्ध लिंग के क्षेत्र रखने को वरीयता देते हैं।

(8) बहुत से किशोरों ने भारत में सार्वजनिक और राजनीतिक जीवन में प्रभाव प्रकस के प्रति अपना कोष प्रकट किया है।

(9) किशोरों का लगभग एक बड़ा बहुमत पोषण, धूमने फिरने, प्रवृत्ति और विचारों के अर्थ में अपने मिलों से प्रभावित थे।

(10) लड़के लड़कियों की अपेक्षा अधिक जैसरवर्त देते है।

(11) किशोरों ने दाबा किया कि कालेज में उन्हें अधिक स्वतंत्रता अधिक दाब आत्म-विश्वास देते हैं।
(१२) किशोरों के एक बड़े बहुमत ने बताया कि मुख्यतः उनके समृद्ध सांस्कृतिक विरासत
और दूर बाहरियों के साथ उनके पारिवारिक बांधनों के कारण वे भारतीय होने में गर्व
अनुभव करते हैं।

(१३) एक बड़े बहुमत ने अपने पसंद का विवाद करने का विचार प्रकट किया।

(१४) किशोरों को लगभग बड़ी संख्या काम शिक्षा पुस्तकों, पत्रिकाओं, चलचित्रों और मिस्र
के जरिए प्राप्त की।

(१५) किशोरों ने विद्यालयों में काम-शिक्षा (अनुदेश) के पक्ष में हिस्सा किया।

ढेराई खिरार (१९९९), "व्यक्तिगत समायोजन पर पैतृक वृत्त का प्रभाव", पी.एच.डी.
मनोविज्ञान, मेरठ विश्वविद्यालय।

उद्देश्यः

(१) वृत्तित और अवृत्तित बच्चों के आपस में व्यक्तिगत समायोजन पर पैतृक वृत्त के
प्रभाव का निर्धारण करना।

(२) पैतृक तीर्थ पर वृत्तित और अवृत्तित बच्चों के आपस में समायोजन के स्तर का
मूल्यांकन करना।

(३) पैतृक तीर्थ पर वृत्तित और अवृत्तित बच्चों के आपस में मुख्य क्षेत्रों को खोजना।

(४) स्त्री बच्चों का उन पुरुष बच्चों के समायोजन प्रायोजकों को तुलना करना।

अनुसंधान डिज़ाइनः

उक्त नमूने में ७०० बच्चे (२२० वृत्तित और ५८० अवृत्तित) शामिल थे : २२० वृत्तित
बच्चों में से, १६० पुरुष थे, दूसरी तरफ अवृत्तित बच्चों में से २०० पुरुष थे। उनके आयु
समृद्ध १३ से १६ वर्ष थे। उक्त नमूना निर्देशन गुरु / समृद्ध नमूना चयन पद्धति के जरिए
किया गया था। आंकड़ा मिलने के समय संस्थान से संग्रह किया था और
अकादमिक उपलब्धि स्कूल रेकार्ड से रिकार्ड किया था। आंकड़ा विश्लेषण टी-परीक्षण की सहायता से किया गया था।

निष्पधि:

(१) समायोजन के स्तर पर पैतृक बच्चन का महत्वपूर्ण अन्तरिक्ष प्रभाव था।

(२) बच्चन विभिन्न प्रकार के कारणों के प्रभावित हुआ था अर्थात् विच्छे / अलगाव के समय आयु, अलगाव के दौरान और बाद में मातृक संबंध की गुणवत्ता और अन्य व्यक्तित्व कारक।

(३) आशिक तौर पर और पौरितौर पर बच्चों के बीच समायोजन के स्तर के संबंध में कोई महत्त्वपूर्ण अन्तर नहीं था।

(४) वे बच्चे, जो ग्रामीण समुदाय के थे, उन बच्चों, जो शहरी क्षेत्रों में स्थित थे, की तुलना में कम समायोजित थे।

(५) ग्रामीण गैर-बच्चों और शहरी अवधित समुद्र बच्चों के समायोजन प्राप्तांकों के बीच महत्त्वपूर्ण अन्तर था।

(६) स्त्री बच्चों पूर्वों की तुलना में उत्कृष्ट समायोजन रखते थे।

(७) अनाथ और आदिवासी तथा अनाथ और पैतृक बच्चों के आपस में प्राप्तांकों के पूर्ण समायोजन के संबंध में महत्त्वपूर्ण अन्तर था।

भाटिया जी.एन. (२००४), "प्राथमिक विद्यालय बच्चों के आपस में तर्कसंगत विचार पर शिक्षा का प्रभाव" पी.एच.डी. शिक्षा विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय।
उद्देश्य:

पूर्व-किशोरों के समायोजन पर शिक्षा, नैतिकता और आयु के प्रभाव का अध्ययन करना।

अनुसंधान डिजाइन:

6 से 12 वर्ष आयु समूहों में आदिवासी और गैर-आदिवासी बच्चों की जनसंख्या के
आपस में से 500 बच्चों का नमूना विश्लेषण रूप से चुना गया था। उनका नमूना पंजाब से लिया
गया था। आंकड़ा संग्रह के लिए महोज द्वारा तैयार किया गया पूर्व-किशोर समायोजन भाषा
प्रयुक्त किया गया था। आंकड़ा के विश्लेषण के लिए 'एनोवा' (एनओवीए) का प्रयोग
किया गया था।

निष्कर्ष:

(1) शिक्षा और आयु ने बच्चों के समायोजन पर कोई प्रभाव नहीं डाला।

(2) गृह, बिछाने, शिक्षकों और सामाजिक स्थितियों के अर्थ में महत्त्वपूर्ण होने से, नैतिक
पृष्ठभूमि अधिक प्रभावशाली होना प्रतीत होता है।

(3) नैतिक पृष्ठभूमि समायोजन पर प्रभाव रखती है।

प्रहोड़ा एन.एन. (१९९२), “जनियर कॉलेज विद्यार्थियों और सामाजिक आर्थिक स्थिति,
वृद्धि और व्यक्तिगत समायोजन के साथ उनके संबंध के नैतिक न्यायनिष्ठ का एक
अन्वेषण”, पी.एच.डी. शिक्षा, मैसूर विश्वविद्यालय।

उद्देश्य:

(1) कक्षा / वर्ग १२ के विद्यार्थियों के नैतिक न्यायनिष्ठ के स्तर का अन्वेषण करना।
(२) एक नैतिक न्याय निर्णय और सामाजिक आर्थिक (एसईएस) के बीच संबंध का निर्णय करना।

(३) नैतिक न्याय निर्णय और बुद्धि का अन्वेषण करना।

(४) नैतिक न्याय निर्णय और व्यक्तिगत का अन्वेषण करना।

(५) विज्ञान, कला और वाणिज्य विद्यालयों के बीच उनके नैतिक न्याय निर्णय के स्तर के महत्वपूर्ण अन्तर का अन्वेषण करना।

परिकल्पना:

(१) भारतीय विद्यालयों (वर्तमान उत्तरदाताओं) और संयुक्त स्थिति में उनके वरिष्ठों के मध्य न्याय निर्णय प्राप्ति (डीआईटी) में कोई महत्वपूर्ण अन्तर नहीं था।

(२) एसईएस और नैतिक न्याय निर्णय बुद्धि और नैतिक न्याय निर्णय के बीच सकारात्मक संबंध है।

(३) विज्ञान और कला विद्यालयों, विज्ञान और वाणिज्य विद्यालयों और कला और वाणिज्य विद्यालयों के बीच उनके नैतिक न्याय निर्णय के स्तर में कोई महत्वपूर्ण अन्तर नहीं है।

अनुसंधान डिजाइन:

सभी तीन विद्यार्थियों ने विज्ञान (लड़के — २८६, लड़कियाँ — १५७) कला (लड़के—१८७, लड़कियाँ — २१२) और वाणिज्य (लड़के—१३०, लड़कियाँ—२५) से स्तरीकृत निर्देश्य नमूना चयन तकनीक का प्रयोग करते हुए १००० विद्यार्थियों का नमूना लिया गया। इसमें निम्नलिखित चार औजारों को प्रयुक्त किया गया:

97
(१) जेम्स आर. रेस्ट (मिनीयोलिस, संयुक्त राज्य अमेरिका) द्वारा तैयार किया परिभाषिक विषय परीक्षण (डी / टी)।

(२) कुमुदवामी का संशोधित रूपांतर एस ई एस माप।

(३) रावेज का प्रामाणी मैट्रिसेज विकसित रूपांतर।

(४) बेल का व्यक्तित्व समायोजन इवेंटरी।

उक्त परीक्षणों का प्रायोगिक परीक्षण और अंतर की मात्रा धारणा संबंधी समझ, थाकन्त आदि संबंधी कठिनाइयों को जानने के लिए संचालित किया गया था। थाकन्त के प्रभाव को कम करने के लिए आंकदो दो चरणों में संग्रह किए गए थे,

(१) एस ई एस और टी आई टी

(२) आरपीएम और पीएआई

उक्त आंकदो का विश्लेषण करने के लिए विनियोजित सांख्यिकीय तकनीकों टी-टेस्ट और सहसंबंध का उत्पादन क्षण गुणांक थे।

निष्कर्षः

(१) भारत (मैसूर) में जूनियर कालेज विद्यार्थियों और संयुक्त राज्य अमेरिका में माध्यमिक विद्यालय विद्यार्थियों के नैतिक न्याय निर्णय प्राप्तांकों में महत्त्वपूर्ण अन्तर था।

(२) ‘डीआईटी’ और ‘एसईबी’ तथा ‘डीआईटी’ और ‘पीएआई’ के बीच संबंध साकारात्मक और महत्त्वपूर्ण था।

(३) विज्ञान और कला विद्यार्थियों, विज्ञान और वाणिज्य विद्यार्थियों और कला और वाणिज्य विद्यार्थियों के बीच महत्त्वपूर्ण अन्तर था।

(४) लड़कों और लड़कियों के बीच महत्त्वपूर्ण अन्तर था।
(५) चार विभाग आयु समूहों के विद्यार्थियों और जूनियर कार्लोजो और समिश्रित कार्लोजो में अध्ययन कर रहे विद्यार्थियों के बीच, जहां तक उनके नैतिक न्याय निर्णय का संबंध है, कोई महत्त्वपूर्ण संबंध भी नहीं रिपोर्ट किया गया।

पैढ़र ए.आर. (१९९५), "रचनात्मक और स्कूल के सामाजिक संस्थान के संबंध में विद्यार्थियों के आसपास में अध्याय यां घटना अपसमायोजन का आपत्ति" पी.एच.डी.

शिक्षा, कार्मिक विश्वविद्यालय।

उद्देश्य:

१) शिक्षकों के अध्याय पढ़ाई घटना सामाजिक मापी स्थिति के आपत्ति के बीच संबंध का अध्ययन करना।

२) अध्याय पढ़ाई घटना के आपत्ति और रचनात्मकता के बीच संबंध का अध्ययन करना।

३) समायोजन और सामाजिक स्वीकारता के बीच संबंध का अध्ययन करना।

४) शिक्षकों के समायोजन और उनकी रचनात्मकता के बीच समायोजन के संबंध में अध्ययन करना, और न

५) अध्याय घटना घटना का सामाजिक आधिक स्थिति आपत्ति और समायोजन के बीच संबंध का अध्ययन करना।

अनुसंधान डिजाइन:

उक्त अध्ययन में ८७७ विद्यार्थी शामिल थे (जिनमें से ३६७ लड़कियां थाई जो १२ से १४ वर्ष के आयुहृणों में कक्षा ६, ७ और ८ को थी)।
यह स्वतंत्र विविधता के रूप में सामाजिक आर्थिक स्थिति (एसईएस) सामाजिक मापी स्थिति (एसएमएस) रचनात्मकता और आदर्शित विविधता के रूप में अध्वीच पद्धति छोड़ने के आपात और समायोजन के साथ एक प्रायोगिक अध्ययन था। प्रयुक्त औजार थे - समाज का सामाजिक मापी परीक्षण, समायोजन मापने के लिए व्यक्तित्व का कैलिफोर्निया परीक्षण, जार्न डी.डे.मोस (1982) का अध्वीच पद्धति छोड़ने का माप, मेहरवी का रचनात्मक विचार का मौखिक परीक्षण और पारिक और त्र्यादें का एस.ई.एस. माप।

निष्कर्ष:

(1) अध्वीच पद्धति छोड़ने का आपात एक समूह के रूप में विद्वानों में रचनात्मकता के साथ महत्त्वपूर्ण रूप से संबंधित नहीं था।

(2) अध्वीच पद्धति छोड़ने आपात बच्चों के एसईएस के साथ महत्वपूर्ण हंग से संबंधित था।

(3) अध्वीच पद्धति छोड़ना का प्रतिष्ठा नगण्य सामाजिक संरचना के साथ स्कूल में अधिक था।

(4) समायोजन और एसएमएस के बीच संबंध महत्वपूर्ण और सशक्त था, समायोजन और एसईएस के बीच भी ऐसा ही मामला था।

(5) रचनात्मकता और समायोजन महत्वपूर्ण रूप से संबंधित नहीं थे।

(6) लड़के और लड़कियों के अध्वीच पद्धति छोड़ने, एसएमएस समायोजन और एसईएस के आपात पर बहुत से पहलुओं में भिड़ थे। निम्न एसएमएस के साथ लड़कियों लड़कों की अपेक्षा अध्वीच पद्धति छोड़ने का अधिक आपात रखती थी, लड़कियां निम्न
एसईएस के साथ लड़को की अपेक्षा बेहतर सामाजिक तौर पर समायोजन रखती थी, लड़को की अपेक्षा अपूर्वीच पढ़ाई छोड़ने के प्रबुद्ध थी।

शाने एस.पी. (१९९४), "व्यक्तिव, समायोजन और दोषियों और गैर-दोषियों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन", पी.एच.डी. मनोविज्ञान, पंजाब विश्वविद्यालय।

उद्देश्य:

(१) दोषी और गैर-दोषी लड़कों के बीच मनोविश्वस्तता अन्तर्मुखता / बहिर्मुखता और कामका के संबंध में अन्तर मालूम करना।

(२) वह सीमा मालूम करना जिस तक दोषी, व्यक्तित्व विशेषताओं के संबंध में गैर-दोषी से भिन्न है।

(३) दोषियों और गैर-दोषियों के समायोजन में गृह, भावनात्मक स्वास्थ्य, सामाजिक और पूर्व समायोजन में अन्तर मालूम करना, और

(४) दोषियों और गैर-दोषियों के अधिमान मूल्यों को मालूम करना।

अनुसंधान डिजाइन:

(१) उक्त अध्ययन के नमूना में दो विकास (समूह) प्रत्येक १०५ लड़को का, अर्थात् दोषियों और गैर-दोषियों के, शामिल थे, गैर-दोषियों को होशियाबुरु (पंजाब राज्य) के प्रमाणित विद्यालय से चुना गया था। विषयों में निम्नलिखित औदारों / साधनों को प्रयोग किया गया:— (१) एयन्ड व्यक्तित्व (परस्नालिटी) इन्वेंटरी (१९७०)

(२) जेसनेस इन्वेंटरी टु मेजर आफ डिलिनक्वेट्स (१९६६)

(३) बेल एडजस्टमेंट इन्वेंटरी (१९७३)

(४) रोकेश वेल्यूक्यूशनरी (१९६७)
निष्कर्षः

(१) दोषियों ने गैर-दोषियों से बाहिरपूर्णता / अन्तरपूर्णता सामाजिक अपसमायोजन और आटोमिज्म और इंकार के संबंध में महत्त्वपूर्ण अंतर प्रदर्शित किए।

(२) दोषियों ने गृह, स्वास्थ्य, भावनात्मक, सामाजिक और पूर्ण समायोजन पर महत्त्वपूर्ण रूप से नगण्य समायोजन प्रदर्शित किया।

(३) मूल्यों के संबंध में दोषी मूल्यों के अभिप्राय में गैर-दोषियों को तुलना में भिन्न थे।

gैर-दोषियों के मामले में, 'खुले मात्रकबाले', 'समर्थ', 'श्रमाकार', 'ईमानदार',
'आजाकारी', 'उत्तरदायी' और 'स्वाभाविकता' के मूल्यों स्पष्ट अंतर पाये गए।

कुमार के. (१९९६), "विफलता आवश्यकताएं, समायोजन और अधि सामान्य, सामान्यों
और सह साम्यों के व्यक्तिवादित हित" पी.एच.डी., मनोविज्ञान, आगरा विश्वविद्यालय।

उद्देश्यः

(१) व्यक्तित्व विशेषताएं, अर्थात् अधिसमान, सामान्य और सहसमान्य स्कूल बच्चों का
विफलताओं, आवश्यकताओं, समायोजन और व्यक्तिवादित हितों के प्रति प्रतिक्रिया
का अनुभेद करना।

(२) इन व्यक्तिगत विशेषताओं अधि सामान्य, सामान्यों और सह-सामान्यों के आपस में
तुलनात्मक अंतरण करना।

अनुसंधान डिजाइनः

जालोटा का सामान्य मानविक योग्यता परीक्षण राजस्थान के विभिन्न भागों से संबंध
९६५ लड़कों और ४४० लड़कियों पर प्रशासित किया गया। ९६५ लड़कों में से ५०
अधिसमान ५० सामान्य और ५० सह-सामान्य लड़के चयन किए गए थे। दूसरी तरफ ४४०
लड़कियों में से ५० अधिसामान्य, ५० सामान्य और ५० सह-सामान्य लड़कियां चयन की गई थीं। इस प्रकार, उक्त नमूना में ३०० विद्यार्थी (१५० पुरुष और १५० स्त्री) शामिल थे। आंकड़ा संग्रह के लिए प्रयुक्त औजार थे - जालोटा का समृद्ध बुद्धि परीक्षण (मौखिक) द्वारा सामान्य (मौखिक) का समृद्ध परीक्षण, उदय पारीक्षण द्वारा बुद्धि का अभिमुख परीक्षण, चित्र-विफलता अभ्ययन का भारतीय अनुकूलन, कुमार द्वारा आवश्यकता निर्धारण माप, कुमार द्वारा बेल का समायोजनय इन्वेंटरी का भारतीय अनुकूलन और धस्तौं हित सारिणी १ आंकड़ा का विश्लेषण मलबेद / विवाद के बाद टी-टेस्ट के विश्लेषण की सहायता से किया गया।

निष्कर्ष:

(१) अधिसामान्य लड़कों का सामान्य व्यक्तियों के समृद्ध के साथ समायोजन और विफलता स्थितियों का सामना करने के लिए सामान्य विभाग रखते हैं। सामान्य लड़कों ने महत्वपूर्ण रूप से उच्च बाधा प्रबलता का प्रदर्शन किया। सह-सामान्य लड़कों का सामान्य समृद्ध के समायोजन के लिए और विफलता कारण स्थितियों का सामना करने के लिए निम्न सामान्य रखते थे।

(२) सामान्य लड़कियों अधिसामान्य लड़कियों की अपेक्षा उतम सह (सुपरइंगे) दण्डायत्रक निविदा के लिए अधिक शिक्षा घात होता प्रतीत होती है। बाधा प्रबलता कोटि के लिए, अतिरिक्त दण्डायत्रक, अन्तर दण्डायत्रक, अद्यतन दण्डायत्रक के सामान्य लड़कियों की अपेक्षा अधिक शिक्षा घात है।

(३) अधिसामान्य लड़कों का सामान्य लड़कों की अपेक्षा उपलब्ध के प्रयोजन में अधिक शिक्षा घात है। सामान्य लड़कों अधिसामान्य लड़कों की अपेक्षा अपमान और
स्वायत्ता के प्रयोजन में अधिक शिक्षाग्राही थे, जबकि सामान्य लड़कों अपमान और स्वायत्ता के प्रयोजन में अधिक शिक्षाग्राही थे।

(४) अधिक सामान्य लड़कियों सामान्य लड़कियों की अपेक्षा निर्भरता और स्वायत्ता के प्रयोजन में अधिक शिक्षाग्राही थी। अधिक सामान्य लड़कियां यह सामान्य लड़कियों को अपेक्षा आकर्षक निर्भरता, स्वायत्ता और प्रदर्शनी के प्रयोजन में अधिक शिक्षाग्राही थी। सह सामान्य लड़कियों काम (सेक्स) के प्रयोजन में अधिक शिक्षाग्राही थी। सामान्य लड़कियां सह सामान्य लड़कियों की अपेक्षा उपलब्ध के प्रयोजन में अधिक शिक्षाग्राही थी।

(५) अधिसामान्य लड़कों ने गृह, स्वास्थ्य और भावनात्मक समायोजन के क्षेत्र में और सह सामान्य लड़कों ने गृह, स्वास्थ्य और सामाजिक समायोजन के क्षेत्र में सर्वोत्तम अभिनव वर्ण चिह्न रखता था। अधिक सामान्य और सामान्य लड़कों सामाजिक समायोजन के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण रूप से भिन्न नहीं थे।

(६) अधिसामान्य लड़कियां गृह, स्वास्थ्य और पूर्ण समायोजन में समायोजन लड़कियां गृह और समायोजन में सर्वोत्तम अभिनव रखती थी, जबकि सामान्य और सहसामान्य लड़कियां गृह, सामाजिक और भावनात्मक समायोजन के क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण रूप से भिन्न नहीं थी।

(७) लड़कों का सामान्य समूह मानवीय क्षेत्र में सहसामान्य को अपेक्षा अधिक शिक्षाग्राही था। यह संगणनीय और मानवीय क्षेत्रों में अधिसामान्य लड़कों को अपेक्षा अधिक शिक्षाग्राही था। संगणनीय और प्रेरक हिंदू के क्षेत्रों में सहसामान्य लड़कों का समूह सामान्य लड़कों के समूह को अपेक्षा अधिक शिक्षाग्राही था।
(8) सामान्य लड़कियां अप्रियसामान्य लड़कियों की तुलना में भौतिक विज्ञान, अभिशास्त्री / कार्यकारी और मानवीय कल्याण के क्षेत्रों में अधिक शिक्षाग्रही थी। सह-सामान्य लड़कियां प्राणिशास्त्रीय विज्ञान और अभिशास्त्री / कार्यकारी हितों के क्षेत्रों में सह सामान्य लड़कियों की अपेक्षा अधिक शिक्षाग्रही थी जो भाषाकीय क्षेत्र में एक समूह में अधिक शिक्षाग्रही थी। सह सामान्य लड़कियां प्राणिशास्त्रीय विज्ञान और भाषाकीय हितों के क्षेत्र में सामान्य लड़कियों की अपेक्षा अधिक शिक्षाग्रही थी जो भौतिक शाखा में एक समूह में अधिक शिक्षाग्रही थी।

कुमार, के. (१९९०), “अकादमिक समायोजन के कुछ व्यक्तित्व सहसंबंध” पी.एच.डी. मनोविज्ञान, बिहार विश्वविद्यालय।

उद्देश्य:
(१) कालेज विद्यार्थियों के अकादमिक समायोजन के लिये औजार विकसित करना।
(२) निष्क्रिय व्यक्तित्व आयामों और कालेज विद्यार्थियों के अकादमिक समायोजन के बीच संबंध निष्क्रिय करना।

अनुसंधान डिजाइन:
एक अकादमिक समायोजन इन्वेंटरी साधन (एएआई) विकसित किया गया था जिस में अकादमिक समायोजन के छ आयाम शामिल थे - अर्थात् पाठ्यक्रम समायोजन, आकांक्षाओं का स्तर व्यक्तिगत कार्यक्षमता, अंशयोग कौशल, व्यक्तिगत संबंध और मानसिक स्वास्थ्य। चूंकि पद्धतियों को ग्रहण करते हुए उक्त इन्वेंटरी विकसित की गई थी। इन्वेंटरी की विश्लेषणता और विश्लेषण के कालेज विद्यार्थियों के अकादमिक समायोजन ने सेक्स
निष्पक्षः

(१) उक्त एएआई कालेज विद्यार्थियों का अकादमिक समायोजन मापने के लिए प्रययरूप से विश्वसनीय और वैध था।

(२) उक्त एएआई छा क्षेत्रो प्रामाण्य और एक संयुक्त प्रासाड (इन्वेंट्री स्कोर) पैदा करने के लिए समर्थ था।

(३) महिला विद्यार्थियों का अकादमिक समायोजन पुरुष विद्यार्थियों की अपेक्षा महत्वपूर्ण रूप से अधिक बेहतर था।

(४) इपीआई के अंग्रेजी और हिंदी रुपान्तर के बीच कोई महत्वपूर्ण अन्तर नहीं पाया गया।

(५) अन्तर्मुखी विद्यार्थी, बहुमुखी विद्यार्थियों की तुलना में अधिक समायोजन रखते थे।

(६) सामान्य (अथवा स्थिर) विद्यार्थी बहुरोगी (अस्थिर) विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक अकादमिक समायोजन रखते थे।

(७) स्थिर अन्तर्मुखी विद्यार्थी अधिकतम अकादमिक समायोजन रखते थे, जबकि अस्थिर बहुमुखी विद्यार्थी निम्नतम समायोजन रखते थे। महत्वपूर्ण शैक्षणिक तत्त्वों यह है कि एएआई प्रययक लाभदायक रूप से कालेज विद्यार्थी के अकादमिक समायोजन के माप के लिए प्रययक किया सकता है।

कुमार, एस. (१९९५), “प्रतिभावी औसत बच्चों के लिए हित प्रययोजन और समायोजन का तुलनात्मक अभ्ययन”, पी.एच.डी. शिक्षा, दिल्ली विश्वविद्यालय।
उद्देश्य:

(1) कुछ विद्यालयों में प्रतिभाशीति (विद्यार्थियों) का आपात निष्कर्ष करना।

(2) प्रतिभाशीति (विद्यार्थियों) के हितो, प्रयोजनों और समस्याओं को निष्कर्ष करना।

(3) प्रतिभाशीति (विद्यार्थियों) के हितो, प्रयोजनों और समस्याओं का औसत विद्यार्थियों के
इनका के साथ तुलना करना।

अनुसंधान डिजाइन:

उक्त अध्ययन दिशा के ७८ माध्यमिक विद्यालयों से निरुद्देश्य रूप से लिए गए कक्षा
दस के ५०९ विद्यार्थियों (३०० लड़कों और २०९ लड़कियों) पर संचालित किया गया।
कालेज आँकड़ा (संप्रह) के लिए प्रमुख आँकड़े थे — जालैया का समूह मानसिक योग्यता
परीक्षण, चर्चा का गैर-भाषा आधारभूत रेकॉर्ड, समस्या का समायोजन इन्वेंटरी और एक
जांच सूची। आँकड़ा का विश्लेषण टी-रेस्यु और कारको के विश्लेषण द्वारा संपूर्णता अन्तर के
विश्लेषण की सहायता से किया गया।

विषयः

(१) प्रतिभाशीति बच्चे दिशा स्कूल जनसंख्या के १२ प्रतिशत द्वारा संचालित किए गए थे।
(२) प्रतिभाव बच्चे वैज्ञानिक और चिकित्सा (मेडिकल) में अत्यधिक रूचि रखते थे।
(३) औसत बच्चे साहित्य और चिकित्सा क्षेत्रों में अत्यधिक रूचि रखते थे।
(४) प्रतिभाशीति बच्चे वैज्ञानिक, चिकित्सा और तकनीकी क्षेत्रों में अधिक रूचि रखते थे
और ललित कला, बाहु खेल क्षेत्रों में कम रूचि रखते थे। तथापि दोनों समूह
तालिका के, कृति, शिल्प और घरेलू कामों में भिन्न भिन्न थे।

107
(५) आंसत विद्यार्थी वैज्ञानिक चिकित्सकीय, साहित्यिक, तकनीकी और खेल क्षेत्रों
अत्यधिक रूचि रखते थे।

(६) दोनो समूह साहित्यिक और चिकित्सकीय क्षेत्रों, कृषि, शिल्प और घरेलू कामों में उनके
हितों में भिन्न नहीं थे।

(७) प्रतिभावन लड़कियाँ चिकित्सकीय और वैज्ञानिक क्षेत्रों में अन्य हित क्षेत्रों की तुलना में
अधिक रूचि रखती थी और शिल्प में बहुत कम रूचि रखती थी।

(८) आंसत लड़कियां साहित्यिक और चिकित्सकीय क्षेत्रों में अत्यधिक रूचि रखती थी
हितों के अन्य क्षेत्रों की तुलना में शिल्प में बहुत कम रूचि रखती थी।

(९) प्रतिभावन लड़कियाँ वैज्ञानिक क्षेत्रों में अधिक रूचि रखती थी और ललित कला, बाझा
और खेल क्षेत्र में कम रूचि रखती थी। तथापि लड़कियाँ के दोनो समूह साहित्यिक
और चिकित्सकीय क्षेत्रों, कृषि, शिल्प, तकनीकी और घरेलू कामों में उनकी रूचि में
भिन्न नहीं थी।

(१०) प्रतिभावन लड़के तकनीकी और शिल्प क्षेत्रों और कम तकनीकी और शिल्प क्षेत्रों और
बुद्धि और घरेलू काम क्षेत्रों में प्रतिभावन लड़कियों को अपेक्षा अधिक रूचि रखते थे।
दोनो समूह वैज्ञानिक, बाझा और खेल क्षेत्रों में उनके हितों में भिन्न नहीं थे।

(११) प्रतिभावन बच्चे अन्य आवश्यकताओं की तुलना में स्व-कार्यनिवृत्त के लिए
आवश्यकता का अत्यधिक अनुभव करते थे और सीद्धांत-विश्लेषक आवश्यकताओं के
लिए निम्नतम अनुभव करते थे।

(१२) प्रतिभावनीय बच्चे समान के लिए अधिक अनुभव करते थे। प्रतिभावनीय बच्चे औसत
बच्चों की अपेक्षा समान, स्व- कार्यनिवृत्त सुरुचिपूर्ण और शिक्षामुक्त
आवश्यकताओं के लिए अधिक अनुभव करते थे। दोनो समूह उनकी प्राथमिक आवश्यकताओं में भिन्न नहीं थे।

(१३) प्रतिभावन लड़कियों अन्य आवश्यकताओं के लिए की अपेक्षा, स्व-कार्यान्वयन की आवश्यकता को अत्यधिक और सुरुचिपूर्ण आवश्यकताओं के लिए निम्नतम अनुभव करती थी। प्राथमिक आवश्यकताएं अन्य आवश्यकताओं की अपेक्षा अधिक थी। उनकी प्राथमिक आवश्यकताएं, शिक्षात्मक आवश्यकताओं की अपेक्षा अधिक थी। लड़कियां प्राथमिक आवश्यकताओं के लिए अधिकतम और सुरुचिपूर्ण आवश्यकताओं के लिए निम्नतम अनुभव करती थी।

(१४) प्रतिभावन लड़कियों, औसत लड़कियों की अपेक्षा सम्मान, स्व-कार्यान्वयन, सुरुचिपूर्ण और शिक्षात्मक आवश्यकताओं के लिए अधिक अनुभव करती थी। दोनो समूह उनकी प्राथमिक आवश्यकताओं में भिन्न नहीं थे।

(१५) सम्मान और शिक्षात्मक आवश्यकताओं के आपस में, औसत लड़कियों की अपेक्षा, प्रतिभावन लड़कियां उपलब्धि, बौद्धिक स्वतंत्रता, बौद्धिक उत्पक्तता, अनुसंधान और समस्या समाधान और रचनात्मक विचार के प्रोत्साहन के लिए अधिक आवश्यकताएं अनुभव करती थी।

(१६) प्रतिभाव लड़के, प्रतिभावन लड़कियों की अपेक्षा शिक्षात्मक आवश्यकताओं के लिए अधिक और सुरुचिपूर्ण संबद्धता और एकाकी आवश्यकताओं के कम अनुभव करते थे। सुरक्षा, सम्मान, स्व-कार्यान्वयन, उपलब्धि, बौद्धिक / स्वतंत्रता, प्रबलता, साहस,
अनुसंधान और समस्या समाधान और रचनात्मक विचार प्रोत्साहन के लिए (दोनों समूहों को) उनकी आवश्यकताओं में कोई अंतर नहीं था।

(१७) औसत लड़के, औसत लड़कियों की अपेक्षा सुरुचिपूर्ण, संबंधता और एकाको आवश्यकताओं के लिए कम अनुभव करते थे।

गुप्ता बी.के. (१९९६), "आयु, लिग (सेक्स), बुद्धि का स्तर और व्यक्तिव विभाजन का चरम प्रतिक्रिया शैली" पी.एच.डी. मनोविज्ञान, आगरा विश्वविद्यालय।

परिकल्पना

(१) सुस्त पैदा फुर्तीले प्रौढ़ों की अपेक्षा अधिक अस्त व्यक्तिक्रिया करते हैं।

(२) खियां समान आयु समूह के पुरुषों की अपेक्षा अधिक अत्यंत प्रतिक्रिया प्रकट करती है।

(३) अत्यंत प्रतिक्रिया शैली आयु में बुद्धि के साथ क्रमशः घटती है।

(४) कम व्यक्तिव समाधान के साथ प्रौढ़ अत्यंत कोटियों में अधिक प्रतिक्रिया देना पसंद करते हैं।

अनुसंधान डिजाइन:

उक्त नमूना में १२०० लोग (६०० पुरुष और ६०० खियां) शामिल थे, जो पश्चिमी उत्तर प्रदेश के १२ से १५ तक वर्ष के आयु समूह से संबंधित थे से निकाला गया था। टूड़न द्वारा विकसित सामूहिक योग्यता परीक्षा (२/६०) बुद्धि के माप के लिए प्रयोग किया गया था। अर्थव्यवस्था सामूहिक मानसिक योग्यता परीक्षा (१/६१) की सहायता से निर्भर भी हुआ था। इसका अर्थव्यवस्था विश्वसतापूर्वी शौक्य ०.५९ था। विद्वानों के व्यक्तिव मूल्यांकन के लिए सक्सेना द्वारा विकसित व्यक्ति परख प्रश्नावली प्रयुक्त की गई थी। उक्त परीक्षण पुनःपरीक्षण
विश्वसनीयता गुणांक 0.90 था। अत्यधिक प्रतिकिया शैली मापने के लिए शेरचांच अंक ब्लाट परीक्षण था। अंकड़ा का विश्लेषण दी-परीक्षण, ची-स्कवायर परीक्षण और सहसंबंध तकनीकों को सहायता से किया गया था।

निष्कर्ष:

(1) अत्यधिक प्रतिकिया शैली ११ वर्ष और फिर १५ और १६ वर्ष में अधिकतम थी।

(2) आयु और अत्यधिक प्रतिकिया शैली (ईआरएस) निम्न सहसंबंध रखती थी।

(3) सेक्स (काम) ने ईआरएस को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया।

(4) बुद्धि ने प्रतिकिया शैली को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित नहीं किया।

(5) समायोजन को सहायता करना और ईआरएस महत्वपूर्ण रूप से संबंधित नहीं थे।

(6) सेक्स (काम) और समायोजन ईआरएस में लगभग अन्तर लाए, जबकि बुद्धि लगभग कोई महत्वपूर्ण अन्तर नहीं लाई।

कुमारी सुधा, (१९९२) “प्रोहों के विभिन्न सामाजिक-मौदिर समूहों के बुद्धि, उपलब्धि, समायोजन और सामाजिक आर्थिक नमूने” पी.एच.डी. शिक्षा, पंजाब विश्वविद्यालय।

उद्देश्य:

(१) सर्वप्रथा उपेक्षा हो, पृथक्कृतों और अस्तिक्कृतों का बुद्धि को तुलना करना।

(२) उनकी उपलब्धियों में अन्तर मालूम करना।

(३) उनके समायोजन को खोज करना।

(४) उनके सामाजिक, आर्थिक, स्थितियों की तुलना करना।

(५) विभिन्न सामाजिक-मौदिर समूहों का बुद्धि, उपलब्धि, समायोजन और सामाजिक-आर्थिक स्थितियों में यदि कोई संबंध विद्यमान था को मालूम करना।
अनुसंधान डिजाइनः

जलांधर शहर के नौ विद्यालयों (सरकारी और प्राइवेट) से ५२९ विद्यार्थियों का एक नमूना निकाला गया था। इन विद्यार्थियों का सामाजिक-मीटर स्थिति के आधार पर व्यौरा तैयार किया गया था, और सर्वप्रियों, उपेक्षितों, पृथकक्रूयों और अस्वीकृतों के चार चरम समूह बनाये गए। आगे, प्रत्येक कोटि से ५० विद्यार्थियों को रखने की व्यवस्था की गई, इस प्रकार अंतिम नमूना में कक्षा / वर्ग ९ के २०० विद्यार्थियों शामिल थे। इन विद्यार्थियों पर जालोटा (१९६३) सामूहिक बुद्धि परीक्षण, मितल (१९६५) सामाजिक आर्थिक स्थिति मापदंड और स्थानीय तौर पर तैयार किया गया सामाजिक-मीटर मापदंड प्रशासित किया गया। परिणामों का सहसंख्या और अन्तरों के विश्लेषण का उत्पाद महत्व गुणांक का प्रयोग करते हुए विश्लेषण किया गया।

निष्कर्षः

(१) लगभग सभी विविधों के चार सामाजिक-मीटर समूहों के आपस में महत्वपूर्ण अंतर थे।

(२) सर्वप्रियों और उपेक्षितों, सर्वप्रियों और पृथकक्रूयों, सर्वप्रियों और अस्वीकृतों के समूह-मेलो / संग्रहों में बुद्धि पर महत्वपूर्ण रूप से भिड़ थे।

(३) विभिन्न सामाजिक मीटर समूहों की उपलब्धि में अंतर महत्वपूर्ण थे।

(४) सर्वप्रियों को अन्य सामाजिक-मीटर समूहों, अर्थात् उपेक्षितों, पृथकक्रूयों और अस्वीकृतों से विविधों पर गणना होती है, उपलब्धि पर अधिकांकम औसत प्राप्त प्रदर्शित करते हैं, उसके बाद पृथकक्रूयों, अस्वीकृतों और उपेक्षितों के औसत प्राप्तिक्ष आते हैं।
(5) उपलब्धि पर अन्तर के बाद मध्य प्रासांक सामाजिक-मोटरी समूह गृह समायोजन और भावनात्मक समायोजन, स्कूल समायोजन और पूर्ण समायोजन के विविधों पर महत्वपूर्ण रूप से ध्येय थे।

(6) सर्वप्रियों ने गृह समायोजन पर अधिकतम मध्य प्रासांक प्राप्त किए।

(7) सामाजिक समायोजन के विविधों पर सर्वप्रियों और अस्तित्वकृतों और उपेक्षितों के समूह मेलों/संगठनों ने उनके औसतों के बीच महत्वपूर्ण अंतर प्राप्त किए।

(8) विद्यालय समायोजन सर्वप्रियों सर्वथा थे। वे अधिकतम औसत प्रासांक (५५.०४) रखते थे उसके बाद पृथककृतों, उपेक्षितों और अस्तित्वकृतों थे।

(9) पूर्ण समायोजन में, सर्वप्रियों अधिकतम औसत प्रासांक (२२१.६८) रखते थे।

(10) एक अनुपस्त सामाजिक आधिक स्थितियों के विविधों के लिए महत्वपूर्ण था जो विभिन्न सामाजिक मोटरी समूहों के आपस में अन्तरों को विद्यमान का संकेत देते है।

(11) सर्वप्रियों का औसत प्रासांक सामाजिक-आधिक स्थितियों में अधिकतम थे, उसके बाद उपेक्षितों पृथककृतों और अस्तित्वकृतों आते थे।

(12) बुद्धि और उपलब्धि के विविधों के बीच सर्वप्रियों के लिए सहसंबंध महत्वपूर्ण था। उनके मामले में बुद्धि और सामाजिक-आधिक स्थितियों के बीच भी सहसंबंध महत्वपूर्ण था।

(13) उपेक्षितों के मामले में सभी सहसंबंध मूल्य समायोजन के विभिन्न विविधों के बीच सकारात्मक थे।

(14) उच्च सकारात्मक सहसंबंध गुणांक पृथककृतों के लिए बुद्धि और उपलब्धि के बीच पाया गया।
(१५) अस्वीकृतों के लिए विभिन्न विविधाओं के बीच संबंध सभी विभिन्न मेलो / संयोगों में सकारात्मक पाया गया।

(१६) सभी सामाजिक-मौटीय समूहों में बुद्धि और उपलब्धि के बीच सकारात्मक संबंध विद्यमान था।

(१७) सभी सामाजिक-मौटीय समूहों के लिए बुद्धि और गृह समायोजन के बीच सकारात्मक संबंध था।

(१८) सर्वप्रथम, उपेक्षकों, पृथककृतों और अस्वीकृतों के लिए उपलब्धि और पूर्ण समायोजन के बीच सकारात्मक सह-संबंध सकारात्मक था।

(१९) पूर्ण समायोजन और सामाजिक-अर्थव्यवस्था स्थितियों के विविधाओं के लिए सामाजिक-मौटीय कोटियों के संबंध में सह-संबंध के उत्पाद-क्षण गुणांक ०.५४६ से ०.४३९ तक के क्रम में थे।

2.९ अध्ययन का महत्व (Signification of Study)

भूतपूर्व अनुसंधानों की समीक्षा से, यह प्रकट होता है कि यद्यपि उन विषयों पर पर्याप्त / बड़ा काम हो चुका है, जो अनुसंधान से प्रत्यक्षता से संबंधित थे, उक्त अध्ययन की सफलता उस सीमा पर निर्भर करती है, जहां तक भूतपूर्व अनुसंधानों सैद्धान्तिक और प्रायोगिक दोनों द्वारा हुई प्रगति पर उक्त अध्ययन से पूर्णीकरण कर सके अर्थात् अधिकतम लाभ उठा सके।

साहित्य की समीक्षा एक अधिनियम परीक्षण है जो गंभीर अन्तर्दृष्टि और समग्र क्षेत्र के यथार्थ्य चिन्ता की मांग करते हैं। यह एक समालोचनात्मक चरण है, जो बंद गति (अनुपेक्षा), अस्वीकृत विषयों, अस्वीकृत अध्ययनों, व्याप्त प्रयासों, परीक्षण और मूल कार्यकलाप जो पूर्वकालीन अनुसंधान कर्तव्यों द्वारा पहले ही छोड़ दी गई, इस संबंध में प्राप्त हुए, और इससे भी
अधिक संकाय अनुसंधान डिजाइनो पर आधारित भ्रमात्मक निष्कर्षों के खतरों को निवन्त करने है । यह समस्याओं और उसकी समायोजनात्मक पहलुओं की बहुत बड़ी समझ प्राप्त करती है, और अनावश्यक दुर्घटना का परीक्रण सुनिश्चित करता है । इसके अलावा यह तुलनात्मक आँकड़ा प्रदान करते हैं ।

यह अनुसंधान पूर्ववर्ती अनुसंधानों से भिन्न है क्योंकि यह अनुसंधान आयु, लिंग और कोटि जैसे बिंदुओं के साथ जनसांख्यिकीय विविधताओं से बिंदुस्थापन से सम्बन्धित है जो अकादमिक के साथ किसी क्षेत्र में अपने आप के साथ समायोजन के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

समायोजन को आयु, क्षेत्र, लिंग, स्कूल का प्रकार, शिक्षा एसईईसी और गरीबी, अधिक जनसांख्यिकी, निरक्षरता, जान का अभाव आदि जैसे अन्य समस्याओं द्वारा अनिवार्य का संकेत दिया गया है । समायोजन का अध्ययन करने के लिए यह जानना आवश्यक है कि वे इसका क्या स्वर रखते हैं । प्रस्तुत अध्ययन समीक्षा किए गए अध्ययनों के अनुसार पद्धति, ओजस्वी, नूतन तत्व तकनीकी सांख्यिकीय पद्धति में लिपित है । अनुसंधान कर्तार द्वारा समीक्षा किए गए सभी अध्ययनों ने समायोजन और अन्य बिंदुओं के बारे में गंभीरता से अवधारण करते हैं, परन्तु प्रस्तुत अध्ययन में मान्यतात्मक स्कूल के विद्यार्थियों के साथ जुड़े हुए अधिकांश जनसांख्यिकीय विविध रूप से उपलब्ध है । इसके अलावा, यह अध्ययन क्षेत्र और ओजस्वी का भाग बना अपने को अलग रखा, जो बिंदुओं की माप के लिए प्रयोग किए गए थे । उक्त अध्ययन अहमदाबाद जिले के गुजराती माध्यम के माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों पर गुजराती भाषा में ओजस्वी के साथ संचालित किया गया है जो इस अध्ययन के पूर्ववर्ती अनुसंधान को अलग बनाता है ।
2.10 उपसंहार (Conclusion)

प्रस्तुत प्रकरण महत्वपूर्ण खात्रण के साथ साहित्य की समीक्षा के साथ व्यवहार करता है। इसके बाद अनुसंधान के आधार और अनुसंधान पर विवेचन करना आवश्यक है, जिसे अगले प्रकरण में विवेचन किया जाएगा।